**सम्पादकीय**
आगामी कार्यक्रम
भागीरथी जलाभिषेक,
गृहे-गृहे गायत्री
यज्ञ-उपासना 2

अमेठी के 251
नगर, गाँवों में
युग चेतना एवं
यज्ञ ज्योति का
व्यापक विस्तार 6

माननीय योगी जी
एवं माननीय केशव
प्रसाद मौर्य जी से मिले
शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि 7

रामचरितमानस
पर श्रद्धेय डॉ.
प्रणव पण्ड्या
जी की विशेष
व्याख्यानमाला 8

चैत्र नवरात्रि से
जन्मशताब्दी
साधना
महापुरश्चरण
आरंभ 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

# प्रज्ञा अभियान मध्य प्रदेश

E-mail: news@awgp.org

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 अप्रैल 2025

वर्ष : 37, अंक : 20
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 अप्रैल 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

## परिवर्तन प्रकृति का नियम है

मनुष्य की गरिमा उसकी भारी-भरकम काया में नहीं, वरन् उसकी सन्तुलित मनःस्थिति में है। परिस्थितियाँ सदा एक जैसी नहीं रह सकतीं, उनका बदलना और पलटना नितान्त स्वाभाविक है। पौधे उगते, बढ़ते, परिपक्व होते और वृक्ष बनकर नष्ट हो जाते हैं। घर में कभी जन्म होता है, कभी मरण। दुकान में किसी दिन घाटा पड़ता है, किसी दिन लाभ होता है। ऋतुएँ बदलती हैं, अपना-अपना प्रभाव दिखाती हैं और फिर नई के आने के लिए स्थान खाली करके स्वयं चली जाती हैं। जो इस काल-चक्र की सुनिश्चितता को समझते हैं, वे पहले से ही यह समझ लेते हैं कि इन परिवर्तनों के लिए उन्हें तैयार रहना चाहिए। जब अनुकूल स्थिति बदलकर प्रतिकूलता का अवसर सामने आये, तो उसे अप्रत्याशित न समझकर सहज स्वाभाविक मानें और अपने चित्त को बेतरह असन्तुलित न करें।

परिवर्तनों का प्रभाव तो हर किसी पर पड़ता है, पर वह विवेकवानों को उतना ही प्रभावित करता है, जितना कि ऋतुओं का बदलाव। गर्मी की ऋतु में जो ढर्रा था, सर्दी आने पर उस अभ्यस्त प्रक्रिया को बदलने में अड़चन तो पड़ती है, पर वह ढर्रा बदल ही लिया जाता है। दिनचर्या, कपड़े-लत्ते, सोना-जागना बहुत कुछ बदलना पड़ता है, पर इसे अनिवार्य मानकर बिना बहुत गड़बड़ाये सहज स्वभाव से सँभाल लिया जाता है।

संयोग-वियोग, हानि-लाभ, सुख-दुःख, जन्म-मरण, सफलता-असफलता जैसे परस्पर विरोधी अवसर दिन और रात की तरह आते और चले जाते हैं। इनने बड़े-बड़ों को प्रभावित किये बिना नहीं छोड़ा। राम का वनवास, सीताहरण, कृष्ण का गोपी विछोह, वंश नाश, व्याध-बाण से मरण, पाण्डवों का अज्ञातवास, ईसा को सूली, सुकरात को विषपान, गाँधी को गोली, शंकराचार्य को भगंदर, रामतीर्थ को जल समाधि जैसे घटना क्रमों को देखते हुए लगता है कि धर्मात्मा और बुद्धिमान भी सदा सुखी ही नहीं बने रहते, उन्हें भी विपत्तियाँ घेरती, झकझोरती हैं। अंतर इतना ही रहता है कि ओछे स्तर के मनुष्य तुच्छ धूलि कणों का अनुकरण करते हैं, जो गर्मी आते ही आकाश छूते और चक्रवात के साथ घूमते हैं, किन्तु वर्षा की बूँदें आते ही कीचड़ की तरह खाई-खड्डों में पड़े दुर्गति का रोना रोते हैं। भारी भरकम चट्टानें इन उतार-चढ़ावों को धैर्यपूर्वक सहतीं और अपना सन्तुलन बनाये रहती हैं।

## समझदार बनिये, संतुलित रहिये

समझदारी का तकाजा है कि संसार चक्र के बदलते क्रम के अनुरूप अपनी मनःस्थिति को तैयार रखें। लाभ, सुख, सफलता, प्रगति, वैभव, पद आदि

# हँसते-हँसाते जिंदगी जीना सीखें

मिलने पर अहंकार से ऐंठने की जरूरत नहीं है। कहा नहीं जा सकता कि वह स्थिति कब तक रहेगी। स्थिति कभी भी बदल और उलट सकती है। ऐसी दशा में रोने, झींकने, खीजने, निराश होने में शक्ति नष्ट करना व्यर्थ है। परिवर्तन के अनुरूप अपने को ढालने में, विपन्नता को सुधारने में, उपाय सोचने, हल निकालने और तालमेल बिठाने में यदि मस्तिष्क को लगाया जाये तो वह प्रयत्न रोने, सिर धुनने की अपेक्षा अधिक श्रेयस्कर होगा ।

उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रबल पुरुषार्थ करना उचित है। आज की अपेक्षा कल का दिन अधिक सुखद और अधिक साधन सम्पन्न हो, इसके लिए उत्साहपूर्वक पूरा प्रयत्न किया जाना चाहिए, लेकिन अनावश्यक रूप से लम्बी-चौड़ी महत्त्वाकांक्षाएँ गढ़ना और उनके तत्काल पूरी न होने पर बेतरह दुःखी होना व्यर्थ है। इच्छाओं के अनुरूप सफलताएँ मिल ही जायें, यह आवश्यक नहीं। मनुष्य का एकाकी प्रयत्न ही सब कुछ नहीं होता। दूसरों के सहयोग और परिस्थितियों की अनुकूलता से ही अमुक सीमा और अमुक अवधि में अभीष्ट सफलताएँ उत्पन्न होती हैं। इसके लिए धैर्य रखना और अनवरत गति से प्रयत्नशील रहना पड़ता है। जो इतना नहीं कर पाते, मनोरथों की पूर्ति के लिए अधीर आतुरता प्रकट करते हैं, विलम्ब लगने या आंशिक सफलता मिलने पर भाग्य को कोसते, दुःख पाते हैं, उन्हें प्रकृति चक्र से अपरिचित ही कहा जा सकता है।

महत्त्वाकांक्षाओं के लिए आतुर उद्विग्नता तो एक प्रकार की मानसिक रुग्णता है, जिससे ग्रसित मनुष्य सदा अशान्त, व्यथित, खिन्न और विक्षुब्ध ही पाये जाते हैं। इस प्रकार की मनोभूमि के लोग पाने का सुख लेने की अपेक्षा अतृप्ति का दुःख अधिक पाते हैं और हर हालत में अपनी ही क्षति करते हैं।

## सुख पाने का राजमार्ग

हर मनुष्य की वास्तविक दुनिया उसकी मान्यताओं और कल्पनाओं की बनी हुई है। सम्बद्ध व्यक्ति, साधन, पदार्थ एवं परिस्थितियाँ यह सब अनुकूल हों तो मनुष्य अपने आपको सुखी मानता है, पर वास्तविकता इससे सर्वथा भिन्न है। कल्पनाओं का गठन जिस स्तर का होता है, उसी स्तर की अनुभूतियाँ होती रहती हैं और उसी आधार पर चित्त प्रसन्न एवं उद्विग्न बना रहता है। बाहर के पदार्थ बहुत कम मात्रा में ही सुख-दुःख दे पाते हैं।

सम्पन्नताएँ एवं विपन्नताएँ सापेक्ष हैं। किसी धनी के साथ तुलना करने पर लगता है कि हम घोर दरिद्र हैं और निर्धनों के साथ तुलना करने पर लगता है कि हमें लाखों, करोड़ों की तुलना में कहीं अधिक मिला हुआ है। तुलना का मापदण्ड ही हमें दरिद्र अथवा धनी होने का निश्चय कराता है और दुःखी रहने अथवा प्रसन्न रहने का अवसर देता है। इच्छित परिस्थिति पाना कठिन है, पर अपना तुलनात्मक मापदण्ड आसानी से बदला जा सकता है और हर स्थिति में जो प्रस्तुत है, उसका सौभाग्य मनाते हुए प्रसन्न रहा जा सकता है। यही तरीका सही और सरल है, इस दृष्टिकोण को अपनाकर हर व्यक्ति हर समय हँसता-मुस्कराता, सुखी, सन्तुष्ट रह सकता है।

जो उपलब्ध है, उसकी महत्ता को समझने का प्रयत्न करें तो ईश्वर को हजार धन्यवाद देने को जी करेगा कि जो लाखों, करोड़ों को नहीं मिल सका, वह हमें मिला हुआ है। जो मिला नहीं है, उसकी कमी का अन्त नहीं। पर्वत से तुलना करने पर चट्टान अपने आपको सदा दीन-दयनीय ही मानेगी, पर यदि किसी ढेले की तुलना में अपना मूल्यांकन करेगी तो, प्रतीत होगा कि जो है उसे नगण्य नहीं समझा जा सकता। छोटी योनियों में जी रहे प्राणियों की तुलना में दरिद्र मनुष्य को भी इतना अधिक मिला है कि वह उनका लेखा-जोखा लेकर हर घड़ी अपना सौभाग्य सराहता रह सकता है।

व्यक्तियों और परिस्थितियों के सम्बन्ध में भी यही बात है। साथियों के दोष ढूढ़ें तो लगेगा कि हमारे कुटुम्बी, मित्र, स्वजन सभी घटिया स्तर के हैं। इसके विपरीत यदि गुण देखने, ढूँढ़ने का स्वभाव हो तो हर व्यक्ति में ढेरों अच्छाइयाँ दिखाई पड़ेंगी। दोष-दर्शन का परिणाम यह है कि जिसे भी ध्यान से देखें, वही अनुपयुक्त, हानिकारक और असन्तोषजनक लगेगा। ऐसी दशा में अपना जी जलता ही रहेगा। यदि सोचने का तरीका बदल दिया जाये और उसी व्यक्ति की अच्छाइयों, सहायताओं और समय-समय पर मिली सद्भावनाओं की सूची तैयार की जाये, तो वही बहुत उपयोगी प्रतीत होंगी और प्रिय लगने लगेंगी।

गुण, कर्म, स्वभाव की सभी कसौटियों पर खरे व्यक्ति ढूँढ़े जायें तो निराशा ही हाथ लगेगी और सारा संसार मात्र दोष, दुर्गुणों से पटा मिलेगा। गुण ग्राहकता की नीति से तो अपूर्णताएँ रहते हुए भी श्रेष्ठताओं की मात्रा इतनी मिल जायेगी, जिस पर सन्तोष किया जा सके और प्रसन्न रहा जा सके।

परिस्थितियों की उतनी महत्ता नहीं, जितनी मनःस्थिति की। गई-गुजरी परिस्थितियों में भी लोग हँसते-हँसाते जिन्दगी काट लेते हैं। इसके विपरीत हर दृष्टि से साधन सम्पन्न व्यक्ति भी रोते-कलपते, झल्लाते, खीजते पाये जाते हैं। हमें अच्छी परिस्थितियाँ पाने और अच्छे व्यक्तियों का साथ ढूँढ़ने का तो प्रयत्न करना ही चाहिए, पर यह नहीं भूल जाना चाहिए कि जब तक अपना दृष्टिकोण गुणग्राही न बनाया जायेगा, तब तक असन्तोष से पीछा छुड़ाना और प्रसन्न रहने का अवसर पाना असम्भव ही बना रहेगा। हमें सबसे अधिक ध्यान अपना मानसिक सन्तुलन एवं स्तर सही बनाने पर देना चाहिए, ताकि संसार का परिवर्तन चक्र एवं विविधतापूर्ण निर्माण हमें उद्विग्न बनाने की अपेक्षा प्रसन्न, प्रमुदित रहने का निमित्त बन सके।

अखण्ड ज्योति, नवम्बर 1976, पृष्ठ 39
से संकलित, सम्पादित

# हम आध्यात्मिक नवजागरण से सूक्ष्म जगत के शोधन के महान अभियान में जुटे हैं

## हमें 'भागीरथी जलाभिषेक' और 'गृहे-गृहे यज्ञ-उपासना' अभियानों के माध्यम से देवत्व को संगठित करना है

### हमारी महान पर्व परम्परा

भारतीय संस्कृति में पर्व-त्यौहार, व्रत-उपवास, संस्कार परम्परा आदि आस्था संवर्धन और धर्मतंत्र से लोकशिक्षण के अत्यंत प्रभावशाली माध्यम रहे हैं। ऋषि-मनीषियों द्वारा विकसित इन परम्पराओं में निहित मार्मिक प्रेरणाएँ जहाँ जीवन में बड़ी सहजता से घुल-मिलकर नैतिक मूल्यों का अभिवर्धन करती हैं, वहीं व्यक्ति को अनुशासित, संगठित और अपने नैतिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय कर्त्तव्यों के प्रति उत्तरदायी बनाती हैं। सामाजिक व्यवस्थाओं को बनाये रखने के लिए प्रशासन में कानून और दण्ड का विधान है। शिक्षण संस्थाएँ जो प्रेरणा देती हैं, वही कार्य नैतिकता और आस्थाओं के सहारे पर्व-त्यौहार, संस्कारों के माध्यम से बड़ी सरलता से हो जाते हैं। बड़ी बात यह है कि लोकशिक्षण की इस प्राचीन परम्परा में जीवन को आनन्द और उल्लास से भर देने वाली सरसता का भी समावेश है, जो जीवन को खिलने और उसे उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए नितांत आवश्यक है।

अखिल विश्व गायत्री परिवार ने समाज के नवनिर्माण के लिए इन परम्पराओं का अत्यंत प्रभावशाली और विवेकसम्मत उपयोग किया है। परम पूज्य गुरुदेव ने समय की आवश्यकता के अनुरूप इनमें जन्मदिन, विवाहदिन जैसी नई परम्पराएँ भी जोड़ीं। गायत्री और यज्ञ वर्ग विशेष तक सीमित हो गये थे, उन्हें सर्वसुलभ, अत्यंत सरल और दीपयज्ञ जैसा आसान, सर्वोपयोगी, सर्वमान्य बना दिया। उन्होंने यज्ञ-संस्कारों के इन आनन्ददायी उत्सवों को घर-घर पहुँचा दिया। गायत्री परिवार के आयोजनों की विशेषता रही है कि यह व्यक्ति को परम्पराओं की लकीर पीटने के लिए प्रेरित नहीं करते, बल्कि समाज में छाए अंधविश्वास, मूढ़मान्यताओं और कुरीतियों से मुक्ति पाने के लिए प्रेरित करते हैं। हमारे कार्यक्रम वर्तमान समय में फलती-फूलती भौतिकतावादी सोच के विपरीत जीवन में आध्यात्मिकता को महत्त्व देने और उसके सर्वांगीण विकास के लिए प्रेरित करते हैं। परम पूज्य गुरुदेव की गौरवशाली परम्परा के अंतर्गत हम इतिहास ही नहीं दोहराते, कहानियाँ ही नहीं सुनाते, अपितु जीवन की समस्याओं और आवश्यकताओं का समाधान भी प्रस्तुत करते हैं।

### मई माह के विशिष्ट कार्यक्रम

अखिल विश्व गायत्री परिवार की समस्त गतिविधियाँ सप्त आन्दोलनों के अंतर्गत की जा रही हैं, वे हैं- साधना, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलम्बन, पर्यावरण संरक्षण, नारी जागरण और व्यसन-कुरीति उन्मूलन। वर्षभर के पर्व-त्यौहारों, महापुरुषों की जयंतियों और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय दिवसों को मनाते हुए उनकी प्रकृति के अनुरूप इन विशिष्ट आन्दोलनों को राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गति दी जाती रही है। इस सामूहिक प्रयोगों के बड़े उत्साहवर्धक सत्परिणाम मिले हैं। गायत्री परिवार की वार्षिक कार्ययोजना के अंतर्गत आगामी मई माह में बड़े महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम होने जा रहे हैं। उनके महत्त्व को समझने और उन्हें अधिक से अधिक सफल और लोकप्रिय बनाने के लिए शीघ्रातिशीघ्र सक्रिय हो जाने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में शान्तिकुञ्ज के मार्गदर्शन में युवा और जोन संगठन द्वारा पूरे देश में जोरशोर से तैयारियाँ की जा रही हैं। गायत्री परिवार से जुड़े और भारतीय संस्कृति से जुड़े प्रत्येक आस्थावान व्यक्ति से अनुरोध है कि नवचेतना जागरण की इस मंगल वेला में अपना अधिकतम योगदान दें।

## गंगा सप्तमी-4 मई 2025
## भागीरथी जलाभिषेक अभियान

हाल ही में महाकुम्भ प्रयागराज ऐतिहासिक सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। विश्व के अब तक के इस सबसे बड़े मेले में 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने अमृत स्नान कर अपनी सनातन आस्थाओं का परिचय दिया। परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के शिष्यों, अनुयायियों का दायित्व है कि युगऋषि के तप और संकल्प के प्रभाव के अनुरूप उभरती इस आस्था को सृजनात्मक दिशा देकर राष्ट्र के नवनिर्माण में उसका सदुपयोग किया जाये।

घटते वन, बढ़ता धरती का तापमान, पिघलते ग्लेशियर, बदलता मौसम, निरंतर गिर रहा धरती का जल स्तर धरती पर मानवता और जीवन के अस्तित्व को चुनौती देने वाला संकट है। इसके प्रति हर व्यक्ति को जागरूक किए बिना संकट का समाधान दिखाई नहीं देता।

गायत्री परिवार हर वर्ष गंगा सप्तमी के दिन भागीरथी जलाभिषेक अभियान चलाकर जल संरक्षण के लिए हर व्यक्ति को जागरूक और सक्रिय बनाने का कार्य करता है। उस दिन अपने निकटतम जलस्रोत, नदी, झरने, तालाब, कुए, बावड़ियाँ, नलकूप आदि को माँ गंगा का ही रूप मानकर उन्हें निर्मल, अविरल बनाने के लिए तरह-तरह के कार्यक्रम किए जाते हैं और रैलियों के माध्यम से जनजागरूकता बढ़ाई जाती है। गंगा सप्तमी के दिन किया जाने वाला यह कार्य मात्र प्रतीकात्मक न रह जाये, इस कार्य में जन-जन का श्रम-साधन सतत नियोजित होता रहे, ऐसे कार्यक्रम बनाए जाते हैं, संकल्प लिए जाते हैं। 5 जून-विश्व पर्यावरण दिवस पर और फिर आषाढ़ पूर्णिमा से आरंभ कर पूरे वर्षाकाल में चलाया जाने वाला वृक्षारोपण अभियान इस जलसंरक्षण अभियान के पूरक हैं।

हाल ही में 66 करोड़ देशवासियों ने प्रयागराज के पवित्र महाकुम्भ में डुबकी लगाई है। उन्हें उनकी आस्था का पुनःस्मरण कराते हुए जलसंरक्षण के महान कार्य में योगदान देने के लिए प्रेरित करने का अभियान चलाया जाना चाहिए।

**भागीरथी जलाभिषेक अभियान की गतिविधियाँ**

गंगा सप्तमी के दिन जनजागरण यात्रा, सभाएँ, नगरवासियों व गाँववालों को साथ लेकर प्रशासन एवं अन्य संस्थाओं के सहयोग से जलस्रोतों पर सामूहिक स्वच्छता श्रमदान

**प्रेरणा एवं सतत सक्रियता के कार्य**

- नदी, तालाब आदि जलस्रोतों को गंदा और जहरीला न होने देने के लिए जनजागरूकता बढ़ाना
- जैविक कृषि को प्रोत्साहन
- कुएँ/तालाबों का गहरीकरण/नवनिर्माण
- जलापूर्ति को निर्बाध बनाना
- नदी-नालों पर बाँध बनाना
- वर्षा जल संचय की व्यवस्था करना

इन दिनों पूरे विश्व में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। चारों ओर देवासुर संग्राम के बीच आध्यात्मिक चेतना का उभार स्पष्ट दिखाई देने लगा है। ऐसे में हमें अपने गायत्री परिवार की विशिष्ट भूमिका और सक्रियता की ओर ध्यान देना चाहिए। अखण्ड दीप प्राकट्य की शताब्दी और परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी के निमित्त इन दिनों चल रहे कार्यक्रमों की उपयोगिता एवं आवश्यकता को समझने, इन्हें गति देने की दृष्टि से यह और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

दृश्य जगत में जो कुछ घटता हुआ हमें दिखाई देता है, वही सबकुछ नहीं है। प्रत्यक्ष के अलावा परोक्ष जगत भी है। स्थूल जगत के अलावा उसकी सूक्ष्म और कारण सत्ता भी है। स्थूल जगत में दिखाई देने वाली घटनाओं का बीज पहले इस सूक्ष्म और कारण जगत में ही डल जाता है। तद्नुसार आज जनआस्थाओं में जो परिवर्तन हमें दिखाई दे रहा है, उसका कारण परम पूज्य गुरुदेव एवं अन्य ऋषिसत्ताओं, देवात्माओं की योजना और तप साधना के प्रभाव से सूक्ष्म जगत के शोधन-परिष्कार को भी माना जाना चाहिए। इस संदर्भ में कुछ दृष्टांत प्रस्तुत हैं:-

### श्रीअरविंद एवं महर्षि रमण की साधना

परम पूज्य गुरुदेव ने भारत की स्वतंत्रता में महर्षि रमण और योगीराज श्रीअरविंद जी की तप साधना का विशेष योगदान बताया है।

श्रीअरविंद ने अलीपुर कारावास में बिताए एक वर्ष से पूर्व स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय योगदान दिया था। कारावास की अवधि में उन्हें एक गहन आध्यात्मिक अनुभव हुआ, जिससे उनके जीवन की दिशा ही बदल गई। उन्हें श्रीकृष्ण द्वारा दिव्य संदेश मिला, जिसमें उन्होंने अनुभव किया कि राष्ट्र की मुक्ति केवल राजनीतिक संघर्ष से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जागरण से ही संभव है।

श्रीअरविंद ने अलीपुर कारागार से छूटने के बाद सन् 1910 में राजनीतिक गतिविधियों को पूरी तरह त्याग दिया और पांडिचेरी चले गए। वहाँ उन्होंने अपना पूरा जीवन योग साधना और अतिमानस के अवतरण के लिए समर्पित कर दिया। पांडिचेरी में उन्होंने 'पूर्ण योग' की अवधारणा विकसित की, जिसका उद्देश्य मानव चेतना का पूर्ण रूपांतरण था। उनका यह मार्ग स्वतंत्रता संग्राम से अधिक व्यापक और गहन था, जो पूरी मानवता के आध्यात्मिक उत्थान पर केंद्रित था।

महर्षि रमण की भारत के स्वतंत्रता संग्राम में प्रत्यक्ष रूप से कोई महत्त्वपूर्ण राजनीतिक भूमिका नहीं थी, किन्तु उन्होंने तिरुवन्नामलई में रहते हुए अपना जीवन अध्यात्म से आत्मिक शक्तियों के विकास के लिए समर्पित किया था। उनका मानना था कि वास्तविक स्वतंत्रता बाहरी परिस्थितियों में नहीं, बल्कि मन की आंतरिक मुक्ति में निहित है। उनके विचारों ने निस्संदेह राष्ट्रीय चेतना को प्रभावित किया।

## बुद्ध पूर्णिमा
## 11 एवं 12 मई 2025
## -: लक्ष्य :-
## 24 लाख घरों में यज्ञ

### परम पूज्य गुरुदेव का दृष्टांत

परम पूज्य गुरुदेव को दादा गुरुदेव से कठोर नियमों के साथ 24 वर्ष के 24 गायत्री महापुरश्चरण करते हुए नैतिक और सामाजिक कर्त्तव्यों के निष्ठापूर्वक निर्वहन का आदेश मिला था। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में एक आदर्श क्रान्तिकारी की भूमिका निभाई। लेकिन जैसे ही उन्हें भारत की स्वतंत्रता सुनिश्चितता प्रतीत हुई, वे स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी से अलग हटकर सूक्ष्म जगत के शोधन हेतु तप साधना और देवमानवों के उत्पादन की ओर अग्रसर हो गए। उनकी तपश्चर्या ने आस्था और नैतिकता सम्पन्न देवमानवों के विराट गायत्री परिवार का निर्माण किया।

### एक शिष्य की जिज्ञासा

परम पूज्य गुरुदेव के अत्यंत प्रिय और हर माह उनसे मिलने आने वाले एक शिष्य ने उनसे प्रश्न किया, पूछा, ''गुरुदेव! युग के नवनिर्माण में गायत्री परिवार की भूमिका क्या है?'' गुरुदेव बोले, ''एक समय सारी दुनिया पुकारेगी-त्राहि माम। इन विलक्षण परिस्थितियों में तुम्हें लोगों का मार्गदर्शन करने और सहारा देने के लिए तैयार रहना होगा।''

### वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में

आज दुनिया बदल रही है। केवल दृश्य जगत में ही परिवर्तन दिखाई नहीं देता, बल्कि सामान्य से लेकर वरिष्ठों, विशिष्टों, मूर्धन्यों, वैज्ञानिकों की आस्थाओं में बड़ी तेजी से परिवर्तन आ रहा है। उपरोक्त उदाहरणों के आधार पर इस महान परिवर्तन में परम पूज्य गुरुदेव और उनके लाखों शिष्य/अनुयायियों की युग निर्माणी आस्था, तप और साधना की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता। इस साधना का प्रभाव प्रत्येक साधक के जीवन में उभरते देवत्व, बदलते विचार और संस्कार, परिवार की परिस्थितियों में आ रहे बदलाव और गुरुकृपा की अनुभूतियों के रूप में देखा जा सकता है।

जन्मशताब्दी वर्ष युग परिवर्तन की विशिष्ट वेला है। यह देवत्व के नवजागरण की मंगल वेला है। यह सूक्ष्म जगत के शोधन और पर्यावरण संरक्षण के लिए विशेष पुरुषार्थ का समय है। प्रस्तुत बुद्ध पूर्णिमा के दिन राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किये जाने वाले सामूहिक यज्ञ प्रयोग का उज्जवल भविष्य के निर्माण में अद्वितीय योगदान होगा।

इस वर्ष भी बुद्ध पूर्णिमा के उपलक्ष्य में 11 (रविवार, अवकाश का दिन होने के कारण) एवं 12 मई (बुद्ध पूर्णिमा) को देश के 24 लाख घरों में यज्ञ कराने का विराट लक्ष्य रखा गया है। संकल्प है कि जन्मशताब्दी वर्ष तक भारतवर्ष के 2 करोड़ घरों को यज्ञ के माध्यम से गुरु, गायत्री और यज्ञ की चेतना से जोड़ लिया जाये। वे आत्माएँ बड़ी सौभाग्यशाली होंगी, जिन्हें महाकाल के संकल्प के साथ जुड़कर भगवान के साथ साझेदारी करने का अवसर प्राप्त होगा।

### विधि-व्यवस्था

विगत कई वर्षों से चली आ रही परम्परा के अनुरूप शान्तिकुञ्ज के युवा प्रकोष्ठ के मार्गदर्शन में पूरे देश में प्रांतीय, जिला एवं क्षेत्रीय स्तर पर तैयारियाँ आरंभ हो गई हैं। **जिन्हें विशेष मार्गदर्शन, प्रचार, प्रशिक्षण सामग्री एवं किसी भी प्रकार के सहयोग की आवश्यकता हो, वे सीधे शान्तिकुञ्ज से संपर्क कर प्राप्त कर सकते हैं।** किये जाने वाले प्रमुख कार्य-

- कार्यकर्त्ता गोष्ठी लेकर उन्हें समस्त अभियान की जानकारी देना, उत्साहवर्धन एवं संकल्प निर्धारण।
- यज्ञ कराने वाले घरों का पंजीयन, पते व मोबाइल नम्बरों का संकलन और उनकी सूची शान्तिकुञ्ज भेजना।
- हर घर में यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री की किट तैयार करना (सामान की सूची शान्तिकुञ्ज से ले लें)
- यज्ञ सम्पन्न कराने वाले पुरोहितों को तैयार करना और उनका प्रशिक्षण। प्रातः यज्ञ के अलावा सायंकाल दीपयज्ञों का भी आयोजन किया जा सकता है।
- यज्ञ कराने वाले घरों में संस्कार, देवस्थापना कराना। **अखण्ड ज्योति/युग निर्माण योजना या प्रज्ञा अभियान के सदस्य बनाना।**

**संपर्क सूत्र**

दोनों अभियानों के लिए आवश्यक प्रेरणा, मार्गदर्शन, प्रशिक्षण, प्रचार सामग्री, जिज्ञासाओं के समाधान, अपने संकल्प, कार्यक्रम, योजनाओं की जानकारी और पंजीकृत घरों की सूची भेजने के लिए सम्पर्क कीजिए :

युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
मोबाइलः 9258360962
व्हॉट्सएपः 9258360652
ईमेलः youthcell@awgp.org

# सराहे गए लोकमंगल के प्रशंसनीय प्रयास

## मधु शर्मा को टॉप टेन चेंज मेकर इंडियन विमेन-2025 में मिला स्थान

**ईशा अंबानी, फाल्गुनी नायर और तृप्ति डिमरी जैसी प्रतिष्ठित हस्तियों की सूची में शामिल हुईं मधु शर्मा**

### गायत्री परिवार की क्रान्तिकारी महिलाएँ

**भोपाल। मध्य प्रदेश**

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2025 के अवसर पर भोपाल की सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं बाल संस्कार साधिका मधु शर्मा को टॉप टेन चेंज मेकर इंडियन विमेन-2025 की प्रतिष्ठित सूची में शामिल किया गया है। यह सम्मान उन्हें समाज सेवा, शिक्षा, महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य और दृष्टिबाधित बच्चों के लिए विशिष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया है। मधु शर्मा इस उपलब्धि को गुरुदेव की कृपा और माताजी के आशीर्वाद का परिणाम मानती हैं और गुरुसत्ता के प्रति गहरी कृतज्ञता प्रकट करती हैं।

मधु शर्मा गायत्री प्रज्ञापीठ बरखेड़ा से जुड़ी हैं। रेलवे में डीआरएम ऑफिस में कार्यालय अधीक्षक के प्रतिष्ठित पद पर कार्य करते हुए भी मिशन के लिए की गई उनकी सेवाएँ अभिनंदनीय हैं। वे पिछले कई वर्षों से श्मशान बस्ती, लहारपुर (भोपाल) की झुग्गियों में बाल संस्कार शाला संचालित कर रही हैं। इससे पूर्व वे शाजापुर में भी इसी कार्य से जुड़ी रहीं, जहाँ उन्होंने 108 बाल संस्कार शालाएँ स्थापित कर गायत्री परिवार के युग निर्माण मिशन को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया।

गायत्री परिवार की गतिविधियों के माध्यम से समाज निर्माण में सुश्री मधु शर्मा का योगदान बहुआयामी है। उन्होंने सविता की स्तुति 'यन्मंडलम ...' का अंग्रेजी रूपांतरण किया है। उन्होंने गायत्री आरती का भी अंग्रेजी अनुवाद

श्रीमती मधु शर्मा झुग्गी बस्तियों में बाल संस्कारशाला चलाते हुए

किया है। इसके अतिरिक्त वे ऑडियो बुक्स, गीतों के अनुवाद और दृष्टिबाधित बच्चों के लिए शैक्षिक सामग्री की रिकॉर्डिंग जैसे कार्यों में भी सक्रिय रूप से संलग्न हैं।

## कारागार में 10 दिवसीय आध्यात्मिक शिविर का समापन

## अध्यात्म के प्रभाव से बंदियों को मिला नया दृष्टिकोण

**बड़वानी। मध्य प्रदेश**

होली मिलन समारोह के साथ केंद्रीय कारागार बड़वानी में बंदियों के व्यक्तित्व परिष्कार हेतु चलाए जा रहे 10 दिवसीय आध्यात्मिक शिविर के एक वर्षीय कार्यक्रम का समापन हुआ। समारोह में उपस्थित पर्यावरण वन जलवायु परिवर्तन परिषद, भारत के चेयरमैन श्री हीरालाल सिरसल्या ने कहा कि गायत्री परिवार द्वारा दी जा रही शिक्षाओं से बंदियों में सकारात्मक परिवर्तन संभव हुआ है। अध्यात्म की शक्ति ने इन्हें नया दृष्टिकोण दिया है। जेल अधीक्षक शेफाली तिवारी, जिला समन्वयक महेन्द्र भावसार, शिविर प्रभारी गोपाल कृष्ण प्रजापति एवं अन्य अतिथियों ने बंदियों को केन्द्रीय कारागार बड़वानी में अप्रैल 2024 से प्रतिमाह इस प्रकार के 10 दिवसीय व्यक्तित्व परिष्कार शिविरों का आयोजन हो रहा है, जिसमें 150 बंदी भाइयों को साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा जैसे विषयों पर प्रशिक्षित किया गया है।

आत्मबोध व सद्विचार के लिए प्रेरित किया।

समापन समारोह में गायत्री परिवार के 40 सहयोगी कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया गया। बंदियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए अपराधी से अच्छे नागरिक बनाने हेतु गायत्री परिवार द्वारा दिये गए मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया।

समापन समारोह में जेल अधीक्षक शेफाली तिवारी को सम्मानित करते गायत्री परिवार के प्रतिनिधि

## केंद्रीय जेल सतना में सम्पन्न हुआ 51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ

### महानिदेशक ने बंदियों के व्यक्तित्व परिष्कार के लिए किए जा रहे प्रयासों का सम्मान किया

कारागार में चले बंदी सुधार कार्यक्रमों में सहयोग के लिए जेल प्रशासन को सम्मानित करते श्री जी.पी. सिंह

**सतना। मध्य प्रदेश**

12 मार्च को केंद्रीय कारागार सतना में आयोजित 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इस अवसर पर भोपाल से आए जेल एवं सुधारात्मक सेवाओं के महानिदेशक श्री जी.पी. सिंह विशेष रूप से उपस्थित थे। उन्होंने गायत्री महामंत्र को विश्वव्यापकता का प्रतीक बताते हुए यज्ञ को पर्यावरण, प्रकृति एवं बंदियों के सर्वांगीण विकास के लिए कल्याणकारी बताया। इसके साथ उन्होंने बंदियों के व्यक्तित्व परिष्कार के लिए गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर जेल प्रशासन, अधिकारियों, कर्मचारियों और गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं को उनके योगदान के लिए सहभागिता प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया।

**विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति**

यज्ञ में जेल अधीक्षक श्रीमती लीना कोष्टा, जेल उप अधीक्षक श्रीकांत त्रिपाठी एवं श्री सोनवीर सिंह, सहायक जेल अधीक्षक श्री अभिमन्यु पांडे एवं सुश्री फिरोजा खातून, कल्याण अधिकारी श्री अनिरुद्ध तिवारी, शिक्षक श्री संतोष बाथम सहित जेल के सभी कर्मचारी उपस्थित रहे। भोपाल उपजोन प्रभारी श्री रघुनाथ हजारी एवं उनकी टोली, चित्रकूट शक्तिपीठ के प्रमुख ट्रस्टी डॉ. रामनारायण त्रिपाठी, जिला समन्वयक सतना श्री आर. के. तिवारी सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

**हर माह होते हैं 10 दिवसीय कार्यक्रम**

संवाददाता श्री रमेश नागर ने बताया कि पिछले वर्ष आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के मध्य प्रदेश प्रवास के अवसर पर उनकी कारागार प्रशासन और गृह विभाग से चर्चा हुई थी। इसके आधार पर गायत्री परिवार को केन्द्रीय कारागार सतना, उज्जैन, बड़वानी और शिवपुरी में अप्रैल 2024 से मार्च 2025 तक हर महीने 10 दिन के आध्यात्मिक व्यक्तित्व परिष्कार शिविर आयोजित करने की सहमति दी गई थी। गायत्री परिवार द्वारा अब तक इन चारों केंद्रीय कारागारों में शिविरों का सफलतापूर्वक संचालन हो चुका है, जिसमें स्थानीय गायत्री परिवार के परिजनों, भाई-बहिनों ने बढ़-चढ़कर सहयोग किया है।

## ग्राम नलकुई से उठी युग निर्माण की प्रेरक लहर

**रतलाम। मध्य प्रदेश:** ग्राम नलकुई निवासी श्री शंभू सिंह एवं राधा सोनगरा युग निर्माण आन्दोलन के सच्चे सेवक के रूप में अपने क्षेत्र में अद्वितीय कार्य कर रहे हैं। उन्होंने 7 गाँवों में 50 युग निर्माण पत्रिकाएँ एवं 50 प्रज्ञा अभियान पत्रिकाएँ नियमित रूप से वितरित कर परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया है। उनकी इस पहल में ग्राम नलकुई के मंत्री महोदय ने भी भागीदारी निभाई है, जिससे यह अभियान और भी प्रभावशाली स्वरूप में आगे बढ़ रहा है। उनका यह समर्पण घर-घर यज्ञ, घर-घर संस्कार के अभियान को गति प्रदान कर रहा है।

## विश्व जल दिवस पर हनुमान ताल से आरंभ किया स्वच्छता अभियान

**रतलाम। मध्य प्रदेश**

विश्व जल दिवस, 22 मार्च को गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ रतलाम के सदस्यों ने हनुमान ताल पर स्वच्छता अभियान की शुरूआत की। दर्जनों कार्यकर्त्ताओं ने मिलकर तालाब व मंदिर परिसर से भारी मात्रा में कचरा हटाया, ताकि आसपास का क्षेत्र स्वच्छ और सुंदर बना रहे। इस अवसर पर नगरवासियों को जल स्त्रोतों को स्वच्छ व संरक्षित रखने का संदेश दिया गया। युवा प्रकोष्ठ के सुरेंद्र जोशी, अर्जुनसिंह चौहान, महेश चौहान आदि ने बताया कि हनुमान ताल पर स्वच्छता अभियान आगामी प्रत्येक रविवार को चलाया जायेगा। इस पहल में क्षेत्रीय पार्षद प्रतिनिधि पवन सोमानी व नगर पालिका की टीम ने भी सहयोग किया।

## महाकाल पर्वत में विशिष्ट साधना अनुष्ठान

### 550 वनवासी भाई-बहिनों ने भागीदारी की

प्रकृति की गोद में बैठकर गायत्री साधना अनुष्ठान में भाग ले रहे वनवासी

**खरगोन। मध्य प्रदेश**

मातृशक्ति जन्म शताब्दी वर्ष की सक्रियता के अंतर्गत झिरन्या ब्लॉक के काकोड़ा महाकाल पर्वत पर अत्यंत प्रभावशाली साधना प्रधान कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। ग्राम मलगाँव से काकोड़ा महाकाल पर्वत तक भव्य जल कलश यात्रा के साथ इसका शुभारंभ हुआ। यात्रा के पश्चात महाकाल पर्वत पर रात्रिकालीन सत्संग में युग संगीत और पूज्य गुरुदेव के अमृत वचनों से युक्त आदिवासी भाषा में भावपूर्ण प्रवचन हुआ, जिसने सभी श्रोताओं को बहुत प्रभावित किया।

कार्यक्रम के अंत में 24 युवा कार्यकर्त्ताओं ने संकल्प लिया कि वे समूचे वनवासी क्षेत्र में गायत्री यज्ञ एवं साधना के माध्यम से जनजागरण अभियान को गति देंगे।

दूसरे दिन प्रातः 4 बजे से दोपहर 4 बजे तक 550 साधकों (300 पुरुष एवं 250 महिलाएँ) ने वृक्षों की छाया में सामूहिक रूप से गायत्री अनुष्ठान किया। इसके उपरांत पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ हुआ। लगभग 2000 श्रद्धालुओं ने महायज्ञ में भाग लिया और महाआरती के बाद भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

श्री नरेंद्र डेमनिया डावर, दयाराम भाई व विक्रम सोलंकी (गायत्री शक्तिपीठ सालीटांडा) द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर श्री रूपसिंह बाबा, डॉ. संतोष पाटीदार, नानला डावर, सिकटा सोलंकी सहित कई वरिष्ठ परिजनों ने अप्रैल में ग्राम वरला बलवाड़ी में प्रस्तावित 24 कुंडीय महायज्ञ की रूपरेखा तैयार की।

## आओ लौट चलें प्रकृति की ओर

शरीर दवा नहीं, शुद्धि माँगता है। दवाओं और बीमारियों से मुक्त जीवन जियें। स्वस्थ रहने के सूत्र भी सीखें।

### योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

**10 दिवसीय शरीर शुद्धि, स्वास्थ्य संवर्धन एवं प्रशिक्षण शिविर**

**शिविरों के दिनांक :** • 17 से 26 अप्रैल 2025 • 08 से 17 मई 2025 • 12 से 21 जून 2025

स्थान सीमित होने के कारण पूर्व पंजीयन अनिवार्य है।

**विस्तृत जानकारी इस लिंक पर देखें -**
https://www.dsvv.ac.in/camps/10-day-health-promotion-training-camp/

**पंजीयन हेतु लिंक**
https://online.dsvv.ac.in/student/CampsRegistration

**शिविर स्थल एवं मार्गदर्शन स्थान:-**
**पूरक एवं वैकल्पिक चिकित्सा विभाग**
देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार, उत्तराखंड (249411)
फोन नंबर - 9258369512 (प्रातः 10 से सायं 5 बजे के मध्य)
इसी नंबर पर आप व्हाट्सएप भी कर सकते है।
अथवा dcam@dsvv.ac.in पर ईमेल कर सकते हैं।

**अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।**

# समर्पण, प्रशिक्षण, संगठन और संस्कार संवर्धन की गतिविधियाँ

## यह प्रतिस्पर्धा अच्छी है

### जोधपुर एवं कोटा जिलों का अनुकरणीय संकल्प, अभिनंदनीय पुरुषार्थ

प्रज्ञा अभियान के माध्यम से जनसंपर्क को गति दे रही कोटा की टीम

इन दिनों पूरे देश में जन्मशताब्दी वर्ष में **अखण्ड ज्योति को प्रचण्ड ज्योति** के रूप में परिवर्तित करने में 'प्रज्ञा अभियान' की उपयोगिता समझने और हर क्षेत्र में इसके माध्यम से अपने **जनसंपर्क अभियान** को गति देने का उत्साह निरंतर बढ़ रहा है। पाक्षिक के मध्य प्रदेश संस्करण के प्रकाशन से लोगों का उत्साह बहुत बढ़ा है। मध्य प्रदेश के कई जिलों में पाक्षिक के सदस्यों की संख्या निर्धारित लक्ष्य 1000 से पार हो गई है। जिन्होंने पाक्षिक की उपयोगिता को समझा, वे अपने जिले की हर शाखा को पाक्षिक के 25-25 सदस्य बनाने के अभियान में जुट गए हैं।

निरंतर बढ़ते उत्साह के बीच विगत लगभग एक माह में राजस्थान के जोधपुर और कोटा जिलों की सक्रियता अनुकरणीय और अभिनंदनीय है। दोनों जिलों ने मात्र पंद्रह दिनों में 500 से अधिक नए सदस्य बनाए हैं, 1008 सदस्य बनाने का उनका लक्ष्य शीघ्र ही पूरा हो जाएगा, ऐसा विश्वास है। उल्लेखनीय है कि जोधपुर एवं कोटा शाखा ने पाक्षिक की सदस्यता का अभियान साथ-साथ आरंभ किया था। दोनों चाहते हैं कि वे पीछे न रहें। यह प्रतिस्पर्धा अच्छी है।

जगदीश शर्मा, जोधपुर (राज.)

जोधपुर के जिला समन्वयक जगदीश शर्मा जी एवं कोटा में टी.आर.शर्मा, प्रभाशंकर दुबे, रामकिशन सुमन, हेमराज पंचाल, जी.डी. पटेल, आर.डी. शर्मा, मधुसूदन शर्मा, मुकेश प्रजापति, वंदना स्वामी, रेखा पटवा, ऊषा राठौड़, नंदकँवर राठौड़ आदि लगभग प्रतिदिन एक नए मण्डल/शाखा को 25 पाक्षिक की वार्षिक सदस्यता दिला रहे हैं। दोनों ही जिलों का संकल्प है कि वे पाक्षिक को जन-जन तक पहुँचाते हुए मिशन को अभूतपूर्व गति प्रदान करेंगे।

### नरसिंहपुर जिले से मिली विशेष प्रेरणा

इससे पूर्व प्रज्ञा अभियान का मध्य प्रदेश संस्करण आरंभ होने के साथ ही नरसिंहपुर जिले में पाक्षिक की सदस्यता के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। श्री वृंदावन पटेल, सह उपजोन समन्वयक एवं जिला समन्वयक श्री अविनाश बेलाकर की टोली गाँव-गाँव गोष्ठियाँ लेती है और वहाँ न्यूनतम 25 सदस्य बनाकर उनके वितरण के साथ जनसंपर्क का नियमित क्रम बनाये रखने की जिम्मेदारी उसी गाँव के एक परिजन को दे दी जाती है। गाँव-गाँव ऐसे जिम्मेदार परिजन तैयार हो रहे हैं। श्री वृंदावन पटेल उनसे निरंतर संपर्क कर प्रोत्साहन, मार्गदर्शन करने की जिम्मेदारी बड़ी अच्छी तरह से निभा रहे हैं। नरसिंहपुर जिला 2000 सदस्य बनाने के लक्ष्य की ओर तेज गति से बढ़ रहा है।

### प्रज्ञा अभियान में भी अग्रणी बना मध्य प्रदेश

परम पूज्य गुरुदेव के हृदय क्षेत्र मध्य प्रदेश ने हमेशा ही मिशन के विभिन्न अभियानों को गति देने में अग्रणी भूमिका निभाई है। अभिनव आन्दोलन के रूप में मध्य प्रदेश ने प्रज्ञा अभियान के क्षेत्रीय संस्करणों के प्रकाशन की पहल की और देश में अपने प्रान्त में सर्वाधिक लोगों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाने वाला राज्य बन गया। शान्तिकुञ्ज में जोन समन्वयक श्री जगदीश कुलमी जी, जोन प्रभारी श्री राजेश पटेल, प्रांतीय प्रभारी श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, श्री रमेश नागर तथा श्री महेन्द्र भावसार के मार्गदर्शन में प्रादेशिक संगठन ने राज्य में अपनी न्यूनतम सदस्य संख्या को पार कर अपने संकल्पित लक्ष्य 55000 (प्रत्येक जिले से 1000) की ओर तेजी से कदम बढ़ा दिये हैं।

## दुर्गम वनवासी क्षेत्र के ग्राम कुंदा माल के बदल रहे हैं संस्कार

## गायत्री संस्कार केंद्र का भूमि पूजन

**ठीकरी, बड़वानी। मध्य प्रदेश**

ग्राम कुंदा माल, तहसील ठीकरी व्यसन से ग्रसित परिवारों के लिए पहचाना जाता रहा है। शराब की लत के कारण घर-घर में झगड़ा, मारपीट के लिए पहचाना जाने वाला यह गाँव अब धीरे-धीरे सन्मार्ग की ओर अग्रसर हो रहा है। ठीकरी तहसील में गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ के तहसील समन्वयक श्री राकेश मेवाड़ ने बताया कि कुंदा माल ग्राम में गुलाब पावणा की जमीन पर अब गायत्री संस्कार केंद्र की स्थापना की जा रही है। गायत्री धाम सेंधवा से आए पंडित मेवालाल पाटीदार द्वारा इस केन्द्र के निर्माण के लिए भूमिपूजन सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ खंडवा से श्री आनंदीलाल सोनी, गायत्री चेतना केंद्र ठीकरी की गायत्री दसोंधी, श्याम महाजन, राजवंत मेवाड़, वंदना राठौड़, दीपक राठौड़, डॉ. राजेश पाटीदार, मंसाराम अवस्या, कमल चौहान उपस्थित रहे।

### मिशन के लिए समर्पित जीवन

ग्राम कुंदा माल निवासी आदिवासी समाज के श्री गुलाब पावणा जब से गायत्री परिवार से जुड़े, उनके जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन होता गया। वे परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपना जीवन ही मिशन को समर्पित कर दिया और लोकमंगल के लिए समर्पित हो गए। वे अपनी भूमि पर गायत्री संस्कार केन्द्र का निर्माण करा रहे हैं।

श्री राकेश मेवाड़ ने बताया कि गायत्री संस्कार केन्द्र में गुरुस्मारक 'सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा', अतिथि कक्ष, गौशाला, ध्यान केंद्र, श्रीराम उपवन का निर्माण सोलंकी परिवार द्वारा किया जाएगा। सोलंकी परिवार ने भूमिपूजन समारोह में संस्कार केन्द्र का शीघ्र निर्माण कर मिशन की गतिविधियाँ संचालित करने का संकल्प लिया।

ग्राम कुंदा माल में भूमिपूजन करते गायत्री परिवार के क्षेत्रीय संगठन के वरिष्ठ परिजन

भूमिपूजन समारोह में ओंकारेश्वर उपजोन समन्वयक श्री पन्नालाल बिरला उपस्थित रहे। उन्होंने बताया कि इस केन्द्र के माध्यम से दुर्गम आदिवासी क्षेत्र में संस्कार परम्परा को गति देते हुए विवाह, अन्नप्राशन, गर्भ पूजन, नामकरण आदि संस्कारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जायेगा।

## जिला स्तरीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर

### 18 परिजनों ने बाल संस्कार शाला संचालित करने का संकल्प लिया

**रायसेन। मध्य प्रदेश**

बरेली तहसील में दिनांक 20 से 23 मार्च तक रायसेन जिले का जिला स्तरीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। शिविर में 40 से अधिक परिजनों ने कर्मकांड की बारीकियाँ, मंत्रों के शुद्ध उच्चारण, संस्कारों का महत्त्व, प्रवचन कला, दीप यज्ञ एवं ढपली वादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रशिक्षण ले रहे रायसेन जिले के भाई-बहिन

प्रशिक्षण का संचालन प्रांतीय प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. रमेश अभिलाषी, श्री विक्रम सिंह पाटीदार और संगीत प्रशिक्षक श्री सौरभ गुप्ता द्वारा किया गया। समापन सत्र में उपजोन समन्वयक श्री रघुनाथ प्रसाद हजारी जी ने मार्गदर्शन दिया। इस अवसर पर 18 परिजनों ने बाल संस्कार शाला संचालित करने का संकल्प लिया, जबकि 8 परिजनों का विधिवत दीक्षा संस्कार हुआ।

जिला समन्वयक श्रीमती बबली धाकड़, तहसील समन्वयक श्री बी.एस. किरार, श्री रमेश पटेल, श्री चतुर नारायण राजपूत, श्री संतोष धाकड़ एवं श्री देवीप्रसाद विश्वकर्मा के प्रयासों से जिले में नई ऊर्जा का संचार हुआ है। प्रतिभागियों ने शिविर की प्रशंसा करते हुए तहसील स्तर पर भी ऐसे प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने की माँग की।

## कन्या कौशल शिविर

**बरघाट, सिवनी। मध्य प्रदेश**

ग्राम काचना के देवी मंदिर प्रांगण में एक दिवसीय कन्या कौशल शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें बालिकाओं को व्यक्तित्व निर्माण, मित्रता के चयन, सोशल मीडिया के सकारात्मक उपयोग, किशोरावस्था की समस्याओं के समाधान और जीवन को सफल बनाने के सूत्रों पर मार्गदर्शन दिया गया।

कार्यक्रम को श्री हेमराज बघेल, श्री ज्वाला प्रसाद ब्रह्मवंशी, श्रीमती गोमती ठाकुर, श्री निम्माजी तुरकर एवं डॉ. भीकांस राहंगडाले ने संबोधित किया। उन्होंने बालिकाओं को जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने और आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रेरित किया।

श्री चैन सिंह टेमरे, विमल राहंगडाले एवं सुखराम उइके द्वारा प्रेरणादायक प्रज्ञा गीतों की प्रस्तुति ने वातावरण को ऊर्जावान बना दिया। आयोजन की सफलता में श्रीमती तारन टेमरे, श्री पी.डी. परते, श्री पीतम पटले, गिरधारी भोयर, जागेश्वर चौहान एवं लखनलाल भोयर का सराहनीय सहयोग रहा।

## 200 महिलाओं का संगठन

### हर वॉर्ड की बहिनों को सौंपी गईं जिम्मेदारियाँ

**नेपानगर, बुरहानपुर। मध्य प्रदेश**

गायत्री शक्तिपीठ नेपानगर में 24 मार्च को एक विशाल महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। नेपानगर की लगभग 200 महिलाओं ने इस आयोजन में भाग लिया। मुख्य वक्ता श्रीमती सोनी जी ने समाजोत्थान में महिलाओं के योगदान को रेखांकित किया। नगर के विभिन्न वॉर्डों के आधार पर अलग-अलग महिला मंडलों का गठन किया गया और उन्हें मिशन की जिम्मेदारियाँ सौंपी गईं। सभी बहिनों ने समाज के उत्कर्ष के कार्यों में सक्रिय योगदान देने का संकल्प लिया। गायत्री परिवार के भाइयों ने भी इस कार्यक्रम में सहयोग देकर इसे सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

## गाँव-गाँव व्यसन मुक्ति जनजागरण रैलियाँ और दीपयज्ञ की शृंखला

**इटारसी, नर्मदापुरम। मध्य प्रदेश**

अखिल विश्व गायत्री परिवार की शाखा इटारसी अपनी तहसील में व्यसनमुक्ति के लिए क्रान्तिकारी और प्रभावशाली अभियान चला रही है। शाखा द्वारा सितंबर 2024 से गाँव-गाँव नशामुक्ति जनजागरण रैलियाँ और दीपयज्ञों की शृंखला चलाई जा रही है। होली पर्व तक इटारसी तहसील के 21 गाँवों, जैसे गौची, तरोंदा, पीपलढाना, जमानी, रैसलपाठा, तीखड़, नागपुरकला, पांडरी, पांडुखेड़ी आदि में इस प्रकार की रैलियों का आयोजन सफलतापूर्वक किया जा चुका है। 2025 में लक्ष्य है कि तहसील की सभी ग्राम पंचायतों तक यह अभियान पहुँचे।

इस अभियान में गाँव में एक दिन पहले पहुँचकर विद्यालय परिवार एवं ग्रामवासियों से संपर्क कर रैली की रूपरेखा निर्धारित की जाती है। रैली में सद्वाक्य बैनर, प्रेरणादायक नारे एवं प्रज्ञागीतों के माध्यम से '**व्यसन से बचाओ, सृजन में लगाओ**' का संदेश जन-जन तक पहुँचाया जाता है। साथ ही परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित साहित्य भी घर-घर वितरित किया जा रहा है।

गाँव-गाँव में दीपयज्ञ और ज्योति कलश यात्राओं की शृंखला भी चल रही है। इनमें भी व्यसन मुक्त जीवन जीते हुए आध्यात्मिक चेतना के उत्थान के लिए नित्य गायत्री उपासना, साधना की प्रेरणा गाँव-गाँव दी जा रही है। श्री लखन पटेल, राजेश चौरे, सुरेश श्रीवास्तव, राजेश पटेल, के.के. गुप्ता, शरद वर्मा, विपिन वर्मा, अरविंद कसोटिया, घनश्याम राय, रघुनाथ पटेल, श्रीमती सरोज चौरे, रक्षा पटेल, सुनीति पटेल, ज्योति बड़ोदिया, मृदुला चौधरी एवं मंजु श्रीवास्तव सहित अनेक समर्पित कार्यकर्त्ताओं का इस प्रेरणादायक अभियान में विशेष योगदान रहा।

**मनुष्य ईर्ष्या से अंधा बन जाता है। ईर्ष्यालु मनुष्य दूसरों के पाप आँखों के सामने रखता है, किन्तु स्वयं के पीठ पीछे। दूसरों को क्षमा कर दो, प्रभु तुम्हें क्षमा कर देगा।**

# नया खेरा ग्राम में ज्योति कलश यात्रा का भावभरा स्वागत

## निष्क्रियता को सक्रियता में बदलने का आह्वान

**टीकमगढ़। मध्य प्रदेश**

ज्योति कलश यात्रा 12 मार्च को टीकमगढ़ जिले के ग्राम पंचायत नया खेरा में पहुँची। ग्रामवासियों ने ग्राम सरपंच श्री भूपेंद्र सिंह यादव के नेतृत्व में इस दिव्य यात्रा का स्वागत किया। घर-घर कलश की आरती एवं पूजन का क्रम रहा।

गायत्री शक्तिपीठ टीकमगढ़ के मुख्य ट्रस्टी पं. महेश बादल ने गाँववासियों के संग पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के प्रेरणास्पद विचार साझा किए। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि जहाँ कहीं भी गायत्री परिवार की गतिविधियाँ निष्क्रिय हो गई हैं-प्रज्ञा मंडल, महिला मंडल, युवा मंडल, पुस्तकालय या दीवार लेखन, उन्हें पुनः जाग्रत किया जाए। इस अवसर पर गायत्री परिवार टीकमगढ़ के वरिष्ठ परिजन एवं जिला स्तरीय कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। प्रमुख रूप से जिला समन्वयक कमलापत शर्मा, सहायक जिला समन्वयक अशोक श्रीवास्तव, तहसील प्रभारी राजेन्द्र सिंह परमार, सहायक टोली नायक मनीष दुबे, संदीप विश्वकर्मा, ज्योति कलश यात्रा व्यवस्थापक धर्मेन्द्र सिंह बुंदेला, वरिष्ठ परिजन रमेश नापित, श्रीमती ममता नापित, श्याम यादव सहित सैकड़ों ग्रामवासियों की भागीदारी रही।

# 38वीं राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता में गायत्री परिवार के यश नामदेव ने जीता स्वर्ण पदक

**जबलपुर। मध्य प्रदेश**

गायत्री परिवार, जबलपुर के सक्रिय सदस्य श्री राकेश नामदेव एवं श्रीमती मनीषा नामदेव के सुपुत्र चि. यश नामदेव ने 38वीं राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतकर अपने नगर और प्रान्त के साथ गायत्री परिवार का नाम रोशन किया है। यह प्रतियोगिता 28 फरवरी से 14 मार्च 2025 तक उत्तराखंड स्थित कंचनजंघा स्टेडियम में आयोजित हुई थी। चि. यश नामदेव ने वुशू खेल की **नंददाओ** स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता है।

चि. यश इससे पहले भी राष्ट्रीय स्तर पर तीन स्वर्ण, दो रजत एवं छः कांस्य पदक जीत चुके हैं। वे एशियन गेम्स में भारत के लिए स्वर्ण पदक जीतने के लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। चि. यश को अपने लक्ष्य की सिद्धि तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

यश नामदेव स्वर्ण पदक ग्रहण करते हुए

# स्वार्थी तत्वों से सावधान रहिए

## भ्रम-भ्रान्तियों से दूर रहिए

समस्त गायत्री परिजनों को यह सूचित किया जाता है कि शान्तिकुञ्ज हरिद्वार परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी एवं परमवंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी की तपःस्थली है। यहाँ देश-विदेश के अनेक श्रद्धालुओं का आगमन अपनी साधनात्मक अभीप्सा की पूर्ति हेतु होता है। यहाँ यह स्पष्ट किया जा रहा है कि गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज से मात्र पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी द्वारा प्रदत्त गायत्री मंत्र की दीक्षा ही प्रदान की जाती है, किसी अन्य उपासना पद्धति की नहीं।

गायत्री मंत्र वेदमंत्र है, महामंत्र है और इस युग के विश्वामित्र परमपूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त एकमात्र साधना है। अतः **यदि कोई शान्तिकुञ्ज का नाम लेकर 'सद्गुण साधना', 'बीज मंत्र साधना' इत्यादि जैसे प्रयोगों को करने अथवा उसका प्रशिक्षण देने का अनुरोध करते हैं, तो उनका नाम व्यवस्थापक, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार को अवश्य सूचित करने का कष्ट करें,** ताकि उचित कार्यवाही की जा सके, क्योंकि ऐसी किसी भी साधना को करने का प्रावधान पूज्य गुरुसत्ता द्वारा नहीं किया गया है।

## अपनी श्रद्धा का दोहन न होने दें

इन दिनों शान्तिकुञ्ज को शिकायतें मिली हैं कि कुछ लोग स्वयं को शान्तिकुञ्ज का प्रतिनिधि बताकर अपने कार्यक्रमों का नाम शान्तिकुञ्ज, गायत्री परिवार, परम पूज्य गुरुदेव, परमवंदनीया माताजी, अखंड ज्योति जैसे नामों से मिलता-जुलता हुआ रखकर **ऑनलाइन या ऑफलाइन अपने व्यक्तिगत कार्यक्रम चला रहे हैं।** चिकित्सा, स्वास्थ्य, योग, सेवा, साधना, संस्कार, यज्ञ आदि के निमित्त किये जा रहे इन कार्यक्रमों के लिए वे अपने व्यक्तिगत खातों में धनराशि जमा कराते हैं। कृपया अपनी आस्था को ऐसे स्वार्थी तत्त्वों से बचाएँ। उन्हें शान्तिकुञ्ज का किसी भी प्रकार का संरक्षण या अनुमति प्राप्त नहीं है। धनराशि जमा करने से पूर्व शान्तिकुञ्ज से जाँच पड़ताल अवश्य कर लें। किसी भी मद में **शान्तिकुञ्ज भेजी जाने वाली धनराशि श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट के खातों में ही मँगाई जाती है,** किसी अन्य में नहीं।

**- निवेदक : व्यवस्थापक, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार। उत्तरखण्ड, पिन-249411**

# होली का उल्लास व नवचेतना जागरण का प्रयास

### व्यसन मुक्ति जनजागरण रैली

**डही, धार। मध्य प्रदेश**

होलिका पर्व के पावन अवसर पर गायत्री परिवार शाखा डही द्वारा एक प्रेरणादायी व्यसन मुक्ति जनजागरण रैली का आयोजन किया गया। जनमानस को नशा मुक्ति के प्रति जागरूक करने हेतु निकाली गई इस रैली में डही, खंडवा, उमरी एवं बाग से आए गायत्री परिवार के प्राणवान कलाकारों ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से नशे के दुष्परिणामों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उनकी प्रस्तुति ने जनसमूह को भावनात्मक रूप से झकझोर दिया।

भगोरिया उत्सव में हजारों की संख्या में उपस्थित आदिवासी भाई-बहिनों को आदिवासी गीतों और लोकशैली में नशा मुक्ति का संदेश दिया गया, जिसे उपस्थित जनसमुदाय ने बड़े ध्यानपूर्वक सुना और सराहा।

इस जनजागरण रैली का सफल संचालन श्री हीरालाल पाटीदार, श्री तैरसिंग चौहान, श्री कैलाश पाटीदार, श्री रमेश परिहार, श्री झेतरसिंह सोलंकी, श्री कनसिंह मोरी, श्री प्रताप मंडलोई और श्री धर्मेंद्र मकवाना के मार्गदर्शन में हुआ।

इस अवसर पर श्री मोहन सिंह डोडवे, श्री केरम सिंह भिड़े, श्री गेंदालाल परिहार, श्री बादाम सिंह बघेल, श्री रेल सिंह रावत, श्री रमेश एएके, श्री मेहताब भाबर, श्री कुंवर सिंह भाबर, श्री शंकर सिंह सोलंकी, श्री तूफान सोलंकी, श्री मड़िया बघेल एवं श्री कुंवर सिंह मोरी का विशेष सहयोग रहा।

### बुंदेली फागों की प्रस्तुति

**हटा। मध्य प्रदेश**

गायत्री शक्तिपीठ परिसर में आयोजित होली मिलन समारोह ने सांस्कृतिक उल्लास और आध्यात्मिक ऊर्जा के अहसास के साथ आदर्श होली का संदेश दिया। कार्यकर्त्ताओं ने एक-दूसरे को अबीर-गुलाल और फूलों से होली खेलते हुए प्रेम, भाईचारे और सद्भाव का परिचय दिया। इस रंगारंग आयोजन में मानवपुर से पधारे परिजनों द्वारा प्रस्तुत बुंदेली फाग की प्रस्तुतियाँ विशेष आकर्षण का केन्द्र थीं, जिन्होंने श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया।

मुख्य अतिथि डॉ. एम.एस. पांडे ने सभी को तिलक लगाकर सम्मानित किया और सभी के दीर्घायु की कामना की। डॉ. सी.एल. नेमा ने रंग पंचमी के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए आदर्श पर्वों की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर रज्जू सिंह, गंगा राम पटेल (जनपद अध्यक्ष), सुशील सेलट, जयप्रकाश नेमा, रमेश श्रीवास्तव, गोविंद पटेल सहित अनेक गणमान्य नागरिक, महिलाएँ एवं परिजन उपस्थित रहे।

### समरसता, सद्भाव और व्यसनमुक्त समाज का संदेश

**भोपाल। मध्य प्रदेश**

गायत्री शक्तिपीठ भोपाल में रंग पंचमी, 20 मार्च के पावन अवसर पर आदर्श होली मिलन का भव्य आयोजन किया गया। इसमें

गायत्री शक्तिपीठ भोपाल में होली का उल्लास

नेपानगर में जलाई गई कंडों की होली

भोपाल के 14 चेतना केंद्रों, शाखाओं, सीहोर एवं मंडीदीप से आए गायत्री परिजनों की उत्साहपूर्ण सहभागिता रही। श्री दिनेश नरगावे, जेल अधीक्षक, जेल मुख्यालय भोपाल (सपत्नीक), मध्य प्रदेश जोनल समन्वयक श्री राजेश पटेल, न्यायाधीश श्री खंडेलवाल, महाकालेश्वर श्रीवास्तव, जैन साहब एवं आर.के. गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री नरगावे ने गायत्री परिवार द्वारा किये जा रहे बंदी सुधार एवं समाज निर्माण के लिए किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। श्री राजेश पटेल ने पर्व संदेश और शुभकामनाएँ दीं। कार्यक्रम का संचालन श्री आर.पी. हजारी ने किया एवं आभार प्रदर्शन श्री रमेश नागर ने किया।

### प्राकृतिक रंगों से खेली होली

**नेपानगर, बुरहानपुर। मध्य प्रदेश**

गायत्री शक्ति पीठ नेपानगर में 13 मार्च की रात 8 बजे होलिका दहन का आयोजन हुआ। परिजनों ने इस समारोह को बुराई पर अच्छाई की विजय के पर्व के उल्लास के साथ मनाया।

अगले दिन शक्तिपीठ परिसर में प्राकृतिक रंगों के साथ होली उत्सव मनाया गया। रंगोत्सव में पर्यावरण-अनुकूल प्राकृतिक रंगों जैसे टेशू (पलाश) के फूलों से बना रंग, चुकंदर, पालक और मुल्तानी मिट्टी के मिश्रण से तैयार विशेष हर्बल चंदन पाउडर का उपयोग किया गया। सभी प्राकृतिक उबटन से होली का आनंद लिया, जिससे न केवल रंगों की शुद्धता बनी रही बल्कि त्वचा को भी पोषण मिला।

इस उत्सव में गायत्री परिवार के परिजनों के साथ स्थानीय गणमान्य नागरिकों और महिला मंडल की बहिनों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया, जिससे आयोजन और भी भव्य और सौहार्द्रपूर्ण बन गया।

# नारी सशक्तीकरण एवं राष्ट्र जागरण के संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

**ग्वालियर। मध्य प्रदेश**

गोविंदपुरी, ग्वालियर में 17 से 20 मार्च 2025 तक की तिथियों में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। महायज्ञ में समरसता का एक अनुपम दृश्य भी देखने को मिला, जब एक मुस्लिम बहिन ने बच्चे के व्यक्तित्व विकास में संस्कार परम्परा का महत्त्व समझते हुए अपना गर्भ संस्कार कराया।

श्री प्रभाकांत तिवारी की टोली ने अत्यंत प्रेरणाप्रद और प्रभावशाली कार्यक्रम सम्पन्न कराया। लगभग 5000 श्रद्धालुओं ने महायज्ञ में भाग लिया, जिनमें से 100 से अधिक लोगों ने नशा छोड़ने का संकल्प लिया। इस चार दिवसीय आयोजन में 50 पुंसवन, 5 दीक्षा, 10 जन्मदिवस एवं 5 अन्नप्राशन संस्कार सम्पन्न कराए गए।

यज्ञ में चल रहा स्वास्थ्य परीक्षण शिविर और यज्ञ करते ग्रामवासी

यज्ञ की शुरुआत जलेश्वर महादेव मंदिर से 101 कलशधारी बहिनों की शोभायात्रा के साथ हुई। कार्यक्रम संयोजक एस.के. शर्मा, पार्षद रेखा त्रिपाठी और मुरैना से पधारे जडेरुवा महाराज ने कलश पूजन संपन्न कराया। इस कलश यात्रा ने मृत्यु भोज और दहेज प्रथा समाप्ति का प्रभावशाली संदेश दिया।

इससे पूर्व भूमिपूजन के अवसर पर 24 याजकों ने अखंड जप की एक-एक घंटे की पारी में भाग लिया और गायत्री मंत्र लेखन की पुस्तिकाएँ वितरित की गईं। कार्यक्रम में ग्वालियर के सभी शक्तिपीठों के प्रमुख ट्रस्टियों एवं अरुंधति महिला मंडल की बहिनों की सक्रिय भागीदारी रही। आभार प्रदर्शन बी.के. गुप्ता एवं के. के. गुप्ता द्वारा किया गया।

यज्ञ में गायत्री शक्तिपीठ तानसेन नगर द्वारा बी.के. गुप्ता के सहयोग से निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन भी किया गया था।

**लोभ से क्रोध उत्पन्न होता है और पराये दोष देखने से वह बढ़ता है। इसे जीतने का अस्त्र है क्षमा। क्षमा से क्रोध शान्त हो जाता है। -महाभारत शान्ति पर्व 163/7**

# अमेठी जिले के 251 नगर, गाँवों में युग चेतना एवं यज्ञ ज्योति का व्यापक विस्तार

## यज्ञ पर्यावरण शुद्धि के साथ मानसिक और आत्मिक शुद्धि का उत्तम साधन है। - आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

**अमेठी। उत्तर प्रदेश**

गायत्री परिवार अमेठी ने लगभग 3 माह तक जिले के 251 गाँव-नगरों का सघन मंथन कर उन गाँवों में युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव की विचार चेतना तथा युग संजीवनी गायत्री व यज्ञ को लाखों लोगों के जीवन में प्रतिष्ठित किया। जनजागरण का यह कार्यक्रम 18 से 22 मार्च 2025 तक की तिथियों में अमेठी में आयोजित राष्ट्र जागरण 251 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के प्रयाज कार्यक्रमों के अंतर्गत किया गया था। परिजनों के अथक पुरुषार्थ के अनुरूप ही यह महायज्ञ भी शानदार सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के माननीय प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी इस महान आध्यात्मिक अनुष्ठान के मुख्य वक्ता थे। उनके अलावा स्थानीय सांसद, विधायक, सुप्रसिद्ध गीतकार कवि श्री मनोज मुंतशिर शुक्ला सहित अनेक गणमान्यों ने इस महायज्ञ में शामिल होकर राष्ट्र के आध्यात्मिक पुनर्जागरण के अभियान में सहभागिता की।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस महायज्ञ में भाग ले रहे श्रद्धालुओं को दीपयज्ञ और पूर्णाहुति के दिन संबोधित किया। उन्होंने यज्ञ को ऋषियों द्वारा प्रदत्त मानवीय चेतना को जाग्रत् करने और समाज में सद्भावना, सहयोग का वातावरण विनिर्मित करने का ज्ञान-विज्ञान बताया। उन्होंने कहा कि यज्ञ न केवल पर्यावरण शुद्धि का माध्यम है, बल्कि यह मानसिक और आत्मिक शुद्धि का भी उत्तम साधन है। यज्ञ से निकलने वाली शक्तियों का संपूर्ण वातावरण और समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जो जीवन को उच्चतम नैतिक मूल्यों के साथ जीने की प्रेरणा देता है।

### डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का विशिष्ट संदेश

**समाज के सच्चे प्रकाश स्तंभ हैं युवा**

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अमेठी के मंच से युवाओं को राष्ट्र के पुनर्निमाण में उनकी भूमिका की विशेष रूप से याद दिलाई। उन्होंने कहा कि राष्ट्र निर्माण का पहला चरण आध्यात्मिक जीवन शैली और साधना का पथ अपनाकर अपने व्यक्तित्व को निखारना है। 'अप्प दीपो भव' के सूत्र को अपनाने वाले युवा ही समाज के लिए सच्चे प्रकाश स्तंभ हैं, जिनके आलोक में एक नए भारत का निर्माण होने जा रहा है।

**अमेठी ने मानव कल्याण के लिए नींव रख दी**

डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि इस महायज्ञ के माध्यम से अयोध्या, मथुरा, काशी की तरह अमेठी ने भी उत्तर प्रदेश में विश्व कल्याण और मानव कल्याण के लिए नींव रख दी है।

**कलश यात्रा** : प्रथम दिन महायज्ञ का शुभारंभ मस्तक पर कलश धारण किये हजारों बहिनों द्वारा निकाली गई भव्य शोभायात्रा के साथ हुआ। इस यात्रा में लगभग 10,000 श्रद्धालुओं ने भागीदारी की।

**ऋषि-देवताओं की भागीदारी**

यज्ञशाला में ऋषिओं की मूर्तियों की स्थापना की गई थी। आश्वमेधिक शैली में वैदिक मंत्रों और भावभरे गीतों के साथ किए गए देव आह्वान-पूजन के समय ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे ऋषिगण स्वयं वहाँ उपस्थित हों।

**24000 दीप महायज्ञ**

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति में विराट दीप महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर समूची यज्ञभूमि 24000 ज्योतित दीपों की दिव्य आभा से जगमगा रही थी। इन दिव्यता से उल्लसित साधकों ने राष्ट्र निर्माण, स्वास्थ्य, योग और व्यसन मुक्ति के संकल्प की ओर एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी यज्ञ की पूर्णाहुति के समय कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित करते हुए

**गायत्रीमय हो गई अमेठी**

अमेठी जिले में गायत्री शक्तिपीठ की नींव रखने वाले स्व. डॉ. सुरेंद्र प्रताप सिंह के संकल्पों का ही परिणाम है कि आज अमेठी नगर गायत्रीमय हो गया है। - *श्री मनोज मुंतशिर, सुप्रसिद्ध गीतकार एवं कवि*

**विशिष्ट श्रद्धांजलि**

शान्तिकुञ्ज से प्रो. प्रमोद भटनागर, श्री नरेन्द्र सिंह ठाकुर एवं श्री उदयकिशोर मिश्रा की टोली अमेठी के राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ को सम्पन्न कराने पहुँची थी। जिला समन्वयक डॉ. त्रिवेणी सिंह ने मंच पर गुरुसत्ता के प्रतिनिधि के रूप में सभी का तिलक कर सम्मान किया। इस अवसर पर उन्होंने इस महायज्ञ की सफलता के लिए क्षेत्र के हजारों कार्यकर्त्ताओं द्वारा किये गए पुरुषार्थ के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने इस महायज्ञ को अखण्ड ज्योति की शताब्दी तथा परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष में अपनी पावन गुरुसत्ता को भावभरी श्रद्धांजलि बताया।

**विशिष्ट गणमान्यों की भागीदारी**

दीपयज्ञ के अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार के परिवहन मंत्री श्री दयाशंकर सिंह जी, खाद्य एवं रसद मंत्री श्री सतीश चंद्र शर्मा जी, कारागार मंत्री दारा सिंह जी, गीतकार एवं कवि श्री मनोज मुंतशिर शुक्ला जी, विधायक श्री राकेश प्रताप सिंह जी और जिला पंचायत अध्यक्ष श्री राजेश कुमार अग्रहरि जी उपस्थित रहे। माननीय श्री दयाशंकर जी ने आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी का भावभरा स्वागत किया।

दीपयज्ञ में उपस्थित विशिष्ट गणमान्य और अपार जनमेदिनी

यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर माननीय सांसद श्री के.एल. शर्मा जी, जिलाध्यक्ष श्री प्रदीप सिंघल जी, श्री राजेश श्रीवास्तव जी, श्री नरेंद्र मिश्रा जी, श्री देवमणि तिवारी जी, विधायक अमेठी श्रीमती महाराजी देवी जी, श्री अरुण प्रजापति जी आदि गणमान्य उपस्थित रहे। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उन सभी को स्मृति चिह्न एवं परमपूज्य गुरुदेव का साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया।

### विशिष्ट उपलब्धियाँ

**251 गर्भोत्सव संस्कार :**

तीसरे दिन 251 बहिनों का गर्भ संस्कार इस महायज्ञ का विशिष्ट आकर्षण था। शान्तिकुञ्ज की टोली ने इसे अमेठी की भूमि में देवमानवों के अवतरण के लिए किया गया विशिष्ट आध्यात्मिक प्रयोग बताया।

**2000 दीक्षा संस्कार :**

अंतिम दिन यज्ञ की पूर्णाहुति से पूर्व लगभग दो हजार नए परिजनों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली। सभी ने सहर्ष अपनी बुराइयों की देवदक्षिणा देने के संकल्प भी लिए।

**251 वृक्षारोपण :** महायज्ञ के स्मारक के रूप में 251 वृक्षारोपण के संकल्प के साथ साधकों को पौधे दिए गए।

### जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक से चर्चा

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की अमेठी की जिलाधिकारी, सुश्री निशा अनंत (आईएएस) और पुलिस अधीक्षक श्रीमती अपर्णा रजत कौशिक जी से भेंट एवं विस्तृत वार्ता हुई। उनके साथ राष्ट्र निर्माण, सामाजिक चेतना के प्रसार और युवाओं के उत्थान के लिए प्रशासनिक सहयोग पर विशेष विचार-विमर्श किया गया।

# स्वयं दीपक बनो, ताकि समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सको

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी दरियावगंज के महायज्ञ में भाग ले रहे श्रद्धालु परिजनों को संबोधित करते हुए

**दरियावगंज, कासगंज। उत्तर प्रदेश**

दरियावगंज में 151 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। 22 मार्च को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने दीप महायज्ञ के अवसर पर उपस्थित होकर पूरे क्षेत्र को आस्था की एक नई ऊर्जा से भर दिया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अपने ओजस्वी संबोधन में पूज्य गुरुदेव के विचारों को उद्धरित करते हुए श्रोताओं को आत्मपरिष्कार से समाज सुधार की दिशा में दृढ़तापूर्वक कदम बढ़ाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि अपने दीपक आप स्वयं बनें, ताकि आपके जीवन का प्रकाश समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सके।

**मझोला में शक्तिपीठ के दर्शन**

इससे पूर्व आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी गायत्री शक्तिपीठ मझोला पहुँचे, माँ गायत्री का दर्शन, पूजन किया और वहाँ उपस्थित श्रद्धालुओं को अपने स्नेहासिक्त वचनों से उत्साहित कर दिया।

## देसंविवि. के साथ हुए दो महत्त्वपूर्ण एमओयू

### विततस मैग्नस विश्वविद्यालय, लिथुआनिया के साथ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार और विततस मैग्नस विश्वविद्यालय, काउनस, लिथुआनिया के बीच 4 मार्च 2025 को शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं शोध से जुड़ी गतिविधियों में सहयोग के लिए एक समझौता हुआ। देसंविवि. के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने तथा वीएमयू. के रेक्टर प्रो. जूओजस ऑगुटिस ने इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू के अंतर्गत दोनों विश्वविद्यालयों के बीच शिक्षकों और छात्रों का आदान-प्रदान, संयुक्त शोध परियोजनाओं का विकास तथा नवाचार आधारित शैक्षणिक कार्यक्रमों के निर्माण को प्राथमिकता दी जाएगी। इस संदर्भ में अगले पाँच वर्षों की एक विस्तृत योजना तैयार की गई है।

### क्वांटम विश्वविद्यालय, रुड़की के साथ

क्वांटम यूनिवर्सिटी, रुड़की (उत्तराखण्ड) और देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के बीच मानविकी, पर्यटन, प्रबंधन अध्ययन, मीडिया अध्ययन, स्वास्थ्य विज्ञान सहित विभिन्न शैक्षणिक क्षेत्रों में आपसी सहयोग से शोध कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए एक एमओयू हुआ। क्वांटम यूनिवर्सिटी के कुलसचिव प्रो. (डॉ.) अमित दीक्षित और देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन ने इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू से दोनों विश्वविद्यालयों को फैकल्टी एवं स्टाफ के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने, शैक्षणिक एवं प्रशासनिक विशेषज्ञता का आदान-प्रदान करने, सेमिनार, संगोष्ठी और जागरूकता कार्यक्रमों के आयोजन में बहुत सहायता मिलेगी।

**शरीर की उपयोगिता निःसंदेह अधिक है, पर उसे इतना न सजाओ कि आत्मा की महिमा फीकी पड़ चले।**

# मुम्बई अश्वमेध यज्ञ की प्रथम वर्षगाँठ और ज्योति कलश पूजन समारोह

## माननीय उपमुख्यमंत्री जी की विशेष उपस्थिति में सम्पन्न हुआ समारोह

23 मार्च 2025 को मुम्बई में अश्वमेध महायज्ञ मुम्बई का प्रथम वार्षिकोत्सव विशाल दीप महायज्ञ के साथ मनाया गया। समारोह के मुख्य वक्ता युवा युग नायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी थे। उन्होंने यज्ञ में भाग ले रहे हजारों साधक, श्रद्धालु को जन्मशताब्दी वर्ष की ऐतिहासिक वेला में समाज के नवनिर्माण के लिए युगशक्ति गायत्री और परम पूज्य गुरुदेव के क्रान्तिकारी विचारों को तीव्र गति से जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प दिलाया।

आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी ने अपने उद्बोधन में 2026 में अखण्ड दीपक के 100 वर्ष पूरे होने और परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी का विशेष उल्लेख किया। उन्होंने कहा, ''वंदनीया माताजी का जीवन एक प्रेरणा है, जिनकी साधना, तप और समर्पण ने हम सभी को सतत सेवा और आत्मोत्थान के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है। उनकी जन्मशताब्दी के अवसर पर हमें उनके जीवन-मूल्यों को आत्मसात कर समाज के उत्थान और धर्म की स्थापना के संकल्प को और सशक्त बनाना चाहिए। अखण्ड दीपक, जो उनके नेतृत्व में प्रज्वलित हुआ, हमारे लिए निरंतर प्रकाश और साहस का प्रतीक बना रहेगा।''

महाराष्ट्र के माननीय उपमुख्यमंत्री श्री एकनाथ शिंदे जी, पूर्व सांस्कृतिक, वित्त और वन मंत्री श्री सुधीर मुनगंटीवार जी और उद्योगपति श्री मिहिर कोटेचा जी की विशेष उपस्थिति रही। उन्होंने भी दीपयज्ञ में भाग लेते हुए अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा, ''कलयुग में हम सभी एक अदृश्य युद्ध का सामना कर रहे हैं। गायत्री परिवार सनातन धर्म की रक्षा और विजय का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। यह समाज में सत्य, धर्म और निष्ठा की स्थापना कर रहा है।''

माननीय डॉ. चिन्मय जी, माननीय श्री शिंदे जी, श्री सुधीर मुनगंटीवार तथा श्री मिहिर कोटेचा जी दीपयज्ञ के अवसर पर महाआरती करते हुए

**अखण्ड ज्योति का दिव्य प्रकाश ज्ञान और साहस का प्रतीक है। -आद. डॉ. चिन्मय जी**

### शान्तिकुञ्ज के आशीष पाकर गद्गद हो गए गणमान्य

23 मार्च को अपने मुम्बई प्रवास में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने व्यापक जनसंपर्क किया। प्रबुद्ध वर्ग, उद्योग जगत, जनसेवक, शिक्षा, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, तकनीकी, प्रशासन, न्याय जगत, सामाजिक संगठन, आध्यात्मिक संगठन, वित्त जगत, पत्रकारिता के क्षेत्र से जुड़े लोगों और गायत्री परिवार के नींव के पत्थर माने जाने वाले वरिष्ठ परिजनों, युवाओं से मिलकर उन्हें विराट देव परिवार का सदस्य होने का गौरव बोध कराया। इस स्नेहवर्षा को गुरुदेव, माताजी और शान्तिकुञ्ज के आशीर्वाद के रूप में पाकर सभी भावविभोर हो गए। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उन्हें समाज और संस्कृति के उत्थान के लिए भारत वर्ष की त्याग-तितिक्षा की संस्कृति को अपनाने की प्रेरणाएँ दीं।

मुम्बई में स्वजनों से संपर्क करने घर-घर पहुँचे आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

# भारतभूमि को न काटा जा सकता है, न बाँटा जा सकता है।

## सनातन नववर्ष उत्सव, नई दिल्ली में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का उद्बोधन

विक्रम संवत 2082 के स्वागत में दिल्ली के चिन्मय मिशन वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में 29 मार्च 2025 को सनातन नववर्ष उत्सव का आयोजन हुआ। आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आभा से आलोकित इस भव्य समारोह के मुख्य अतिथि देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी थे। उन्होंने अपने प्रभावशाली उद्बोधन से सभी को नई चेतना और संकल्प शक्ति से ओतप्रोत कर दिया।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि महापुरुषों को जन्म देने वाली भारत भूमि की स्वर्ण गाथा सदियों से चली आ रही है। इसे न काटा जा सकता है, न बाँटा जा सकता है। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि नवसंवत्सर वह अवसर है जो मनुष्य के सौभाग्य को जगाने के लिए आता है। हमें मनुष्य जन्म इसीलिए मिला है कि हम अपने जीवन के मूल्य को समझें और सनातन धर्म की रक्षा में अपना योगदान दें।

समारोह के विशिष्ट अतिथि स्वामी विशालानंद जी और स्वामी प्रेम अन्वेषी जी का सम्मान किया गया। उन्होंने भी अपने सारगर्भित विचारों से समस्त सभा को आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत किया।

# उत्तर प्रदेश की राजधानी में राजनीति के पुरोधाओं से चर्चा, कार्यकर्त्ताओं पर स्नेहवर्षा

## माननीय मुख्यमंत्री जी को शान्तिकुञ्ज में आमंत्रित किया

**लखनऊ। उत्तर प्रदेश**

वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना का परचम लहरा रहे अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युग नायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 21 मार्च को लखनऊ के प्रवास पर थे। इस अवसर पर उन्होंने प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी, उपमुख्यमंत्री माननीय श्री केशव प्रसाद मौर्य जी तथा कई अन्य गणमान्यों से मुलाकात की।

डॉ. चिन्मय जी ने माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी से भेंट की। राष्ट्र की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना के उत्थान के लिए किए जा रहे उनके अद्वितीय कार्यों के लिए शान्तिकुञ्ज की ओर से उनका अभिनंदन किया। उन्हें परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित अनुपम ग्रंथ 'समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान' भेंट किया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने माननीय मुख्यमंत्री जी को देव संस्कृति विश्वविद्यालय व्याख्यानमाला 'वैश्विक समस्याएँ: सनातन समाधान' तथा गायत्री परिवार की आराध्या परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी एवं दिव्य अखण्ड दीप के शताब्दी समारोह 2026 से जुड़े आगामी कार्यक्रम 'अखंड ज्योति सम्मेलन' में सादर आमंत्रित किया।

यह मुलाकात राष्ट्र, संस्कृति एवं सनातन मूल्यों के वैश्विक विस्तार की दिशा में एक प्रेरणादायी संवाद रही। माननीय प्रति कुलपति जी ने उन्हें विश्वविद्यालय में स्थापित एशिया के प्रथम बाल्टिक केंद्र एवं दक्षिण एशियाई शान्ति एवं सुलह संस्थान की गतिविधियों, उपलब्धियों एवं भावी संभावनाओं से अवगत कराया।

लखनऊ में माननीय योगी आदित्यनाथ जी एवं माननीय श्री केशव प्रसाद मौर्य जी से भेंट करने पहुँचे आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

### माननीय उप मुख्यमंत्री जी से भेंट

21 मार्च को लखनऊ पहुँचने पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति जी की पहली भेंट उत्तर प्रदेश के माननीय उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य जी से हुई। इस अवसर पर प्रदेश के परिवहन मंत्री माननीय दयाशंकर सिंह जी भी उपस्थित थे। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उन्हें गायत्री परिवार की विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक गतिविधियों का परिचय दिया। इस चर्चा में उन संभावनाओं पर भी विमर्श हुआ, जिनके माध्यम से आध्यात्मिक जागरूकता और नैतिकता के प्रचार-प्रसार से समाज और राष्ट्र को एक नई दिशा दी जा सकती है। डॉ. पण्ड्या जी ने उन्हें गुरुदेव के विचारों से अवगत कराते हुए कहा कि राष्ट्र का सशक्तीकरण तभी संभव है, जब समाज के प्रत्येक व्यक्ति में नैतिक और आध्यात्मिक चेतना का जागरण हो।

### सीतापुर के विधायक और एमएलसी से भेंट

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की सीतापुर से उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य श्री पवन सिंह चौहान जी तथा सीतापुर के विधायक श्री ज्ञान तिवारी जी से भी भेंट हुई। दोनों महानुभावों के साथ राष्ट्र निर्माण के विभिन्न आयामों पर विचार-विमर्श हुआ। यह चर्चा मुख्य रूप से आध्यात्मिकता और सामाजिक चेतना के विकास से समाज के उत्थान पर केन्द्रित रही।

इसके पश्चात लखनऊ में गायत्री परिवार के परिजनों से जनसंपर्क का विशिष्ट कार्यक्रम चला। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उन्हें राष्ट्र और समाज की सेवा के अपने संकल्प को और दृढ़ करने तथा समाज निर्माण की दिशा में चल रहे कार्यों को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया।

### लखनऊ में हुआ भव्य स्वागत

21 मार्च को डॉ. चिन्मय जी के लखनऊ पहुँचने पर लखनऊ और आसपास के आत्मीय परिजनों के साथ प्रदेश के परिवहन मंत्री श्री दयाशंकर सिंह जी भी हवाई अड्डे पर पहुँचे। इससे यह स्नेहपूर्ण संगम और भी भावनात्मक हो गया।

परिवहन मंत्री माननीय दयाशंकर सिंह जी की विशेष उपस्थिति में लखनऊ हवाई अड्डे पर स्वागत व परिजनों से भेंट

# देव संस्कृति विश्वविद्यालय राष्ट्र के नवनिर्माण में बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। - *श्री अवध ओझा, सुप्रसिद्ध शिक्षाविद*

सिविल सेवा परीक्षाओं की तैयारी के लिए प्रतिष्ठित प्रशिक्षक और प्रेरक वक्ता श्री अवध ओझा का देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आगमन हुआ। उनकी प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से विस्तृत चर्चा हुई। वे सेवा, समाज सुधार एवं राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था तथा यहाँ के दिव्य वातावरण से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने देव संस्कृति विश्वविद्यालय की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह संस्थान नैतिकता सम्पन्न व्यक्तित्वों को गढ़ते हुए राष्ट्र के नवनिर्माण में बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

श्री अवध ओझा माननीय प्रति कुलपति जी से चर्चा करते हुए

**क्रोध को शान्ति से जीतो, अभिमान को नम्रता से जीतो, माया को सरलता से और संतोष से लोभ को जीतना चाहिए। - दशवैकालिक 8/39**

युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में नवरात्रि साधना

## श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की विशेष व्याख्यानमाला

### साधना काल में राम कथा सुनना पूर्ण तीर्थयात्रा के समान है

श्रद्धेय के श्रीमुख से प्रवाहित ऐसी ही मार्मिक प्रेरणाओं ने नवरात्रि काल में साधना कर रहे साधकों को साधना से सिद्ध की ओर अग्रेसित होने में बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

विगत लगभग दो दशक से चली आ रही परंपरा के अनुरूप शान्तिकुञ्ज में प्रस्तुत नवरात्रि में भी करोड़ों लोगों के आत्मीय मार्गदर्शक श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की रामचरितमानस पर विशेष व्याख्यानमाला आयोजित हुई। देश-विदेश से शान्तिकुञ्ज आए हजारों श्रद्धालुओं, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के आचार्य-विद्यार्थियों और ऑनलाइन जुड़े लाखों परिजनों को उनकी गहन आध्यात्मिक दृष्टि और उदात्त चिंतन से युक्त रामचरित के मर्म को समझने का अवसर मिला। श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने भगवान राम के जीवनादर्शों को जीवन में उतारने के सूत्र बताये।

प्रतिदिन भगवान राम के जीवन से जुड़े अलग-अलग विषयों पर उद्बोधन हुए। नवरात्रि के प्रथम दिन ही उन्होंने कहा कि साधना काल में राम कथा सुनना पूर्ण तीर्थयात्रा के समान है। रामकथा तीर्थों का समूह है, इसमें कहीं गंगा, यमुना, सरस्वती, सरयू जैसी पवित्र नदियाँ हैं, तो कहीं प्रयागराज, नैमिषारण्य, अयोध्या, मिथिला, चित्रकूट, पंचवटी, रामेश्वरम जैसे पवित्र तीर्थ हैं। राम कथा में राम भक्ति की गंगा प्रवाहित है। भगवान राम स्वयं साक्षात् तीर्थ स्वरूप हैं। वे जहाँ-जहाँ गए और निवास किया, वे सभी स्थान तीर्थ बन गए।

#### शान्तिकुञ्ज एक आदर्श तीर्थ है

श्रद्धेय ने कहा कि शान्तिकुञ्ज एक आदर्श तीर्थ है। परम पूज्य गुरुदेव ने शान्तिकुञ्ज की स्थापना कर तीर्थ सेवन एवं साधना को सर्वसुलभ बना दिया है। एकनिष्ठ भाव से की जाने वाली साधना, सत्य, तप, दान, क्षमा, संयम, ब्रह्मचर्य जैसे श्रेष्ठ आचरण का पालन भी तीर्थ की श्रेणी में आते हैं।

## चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ हुआ एक वर्षीय विश्वव्यापी जन्मशताब्दी साधना महापुरश्चरण

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन नवसंवत् 2082 के आरंभ के साथ एक वर्षीय विश्वव्यापी जन्मशताब्दी साधना महापुरश्चरण आरंभ हो गया है। यह सामूहिक महापुरश्चरण साधना शान्तिकुञ्ज के साथ देश के प्रायः सभी प्रमुख शक्तिपीठों में भी चलेगी। उल्लेखनीय है कि अखण्ड ज्योति और प्रज्ञा अभियान में विगत दिनों जन्मशताब्दी वर्ष के पाँच बड़े आयोजनों की योजना बताई गई है। ये आयोजन साधना प्रधान ही होंगे। ये जन्मशताब्दी साधना महापुरश्चरण में भागीदारी कर रहे पंजीकृत साधकों के पूर्णाहुति समारोहों के रूप में आयोजित किए जायेंगे। शान्तिकुञ्ज में आयोजित होने वाले समारोह में 2,40,000 साधकों के और शेष चार समारोहों में चौबीस-चौबीस हजार साधकों के भाग लेने का लक्ष्य रखा गया है।

शान्तिकुञ्ज के सभी कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों की होती है प्रतिदिन की सामूहिक साधना में भागीदारी

शान्तिकुञ्ज के साधना कक्ष, गायत्री माता मंदिर, चैतन्य तीर्थ क्षेत्र और देवात्मा हिमालय क्षेत्र में यह साधना चल रही है। शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के सभी कार्यकर्त्ता भाई-बहिन और सभी शिविरार्थी भाई-बहिन इस महापुरश्चरण साधना में भागीदारी कर रहे हैं। प्रथम दिन आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी तथा शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक आदरणीय श्री योगेन्द्र गिरि जी ने साधना कक्ष में दीप प्रज्वलन कर इस महापुरश्चरण साधना का शुभारंभ किया। उल्लेखनीय है कि उन दोनों सहित शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ कार्यकर्त्तागण साधना कक्ष में चल रहे सामूहिक जप में नियमित रूप से भाग ले रहे हैं।

#### नए संकल्प और सकारात्मक परिवर्तन लाने का अवसर

नवसंवत्सर कई नूतन प्रारंभों का दिन है। सृष्टि के जन्म और चैत्र नवरात्रि का प्रथम दिन भी है। ऐसे अवसर पर साधना महापुरश्चरण का शुभारंभ एक गौरवशाली अभियान की अहम दिशा है, जो हमारे जीवन में नए संकल्प और सकारात्मक परिवर्तन लाने का अवसर प्रदान करेगा। नवसंवत्सर का यह दिन हमें आत्म-चिंतन, साधना और आध्यात्मिक विकास की ओर प्रेरित करता है।

*- आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी*

# भारतीय संस्कृति में निहित है विश्व की समस्याओं का समाधान

- श्री गजेन्द्र सिहं शेखावत, केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री

संगोष्ठी का उद्घाटन करते श्री मानः गजेन्द्र सिंह शेखावत, माता श्री मंगला जी एवं आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में दिनांक 29 एवं 30 मार्च को 'राष्ट्रीय एकता और सनातन संस्कृति' विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई। इस संगोष्ठी में भारत सहित रूस, अमेरिका आदि देशों के सनातन संस्कृति के विस्तार में जुटे अनेक शिक्षाविदों, विचारकों एवं विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा किये।

संगोष्ठी का शुभारंभ मुख्य अतिथि केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, देसंविवि के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, हरिद्वार के सांसद श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत, हंस फाउण्डेशन की संस्थापिका माता श्री मंगला द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ।

माननीय श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने अपने उद्बोधन में भारत के ऋषि, मुनि, संत, महात्मा और उनके द्वारा रचित वेद शास्त्रों व धर्मग्रंथों को सनातन संस्कृति का संवाहक बताया। उन्होंने कहा कि आज पूरा विश्व आपसी टकराव, पर्यावरण, मानसिक स्वास्थ्य आदि विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब इसका एकमात्र समाधान भारत की सनातन संस्कृति में संव्याप्त है। विश्व शान्ति और मानवता के उत्थान के लिए सनातन संस्कृति के संरक्षण और प्रचार-प्रसार की दिशा में सभी को मिलकर काम करना चाहिए।

सांसद श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने युवाओं से संस्कृति की रक्षा के लिए आगे आने का आह्वान किया। माता मंगला ने संत समाज को सनातन संस्कृति का रक्षक बताया।

यह आयोजन देवभूमि विकास संस्थान देहरादून एवं देसंविवि के संयुक्त तत्त्वावधान में हुआ। सम्मेलन में सनातन संस्कृति से जुड़ी विभिन्न धाराओं पर सत्रों का आयोजन हुआ। इसमें हिमालयन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अध्यक्ष डॉ. विजय धस्माना ने स्वास्थ्य और मानसिक शांति, दून विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल ने भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलु, जीबी पंत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.एम.एम चौहान ने आत्मनिर्भर भारत विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने उद्घाटन सत्र में पधारे समस्त अतिथियों को गायत्री महामंत्र की चादर ओढ़ाकर तथा युगसाहित्य, प्रतीक चिह्न आदि भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री भोलेजी महाराज, विधायक श्री मदन कौशिक, हरिद्वार की मेयर श्रीमती किरण जैसल, शान्तिकुञ्ज व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि, देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी आदि गणमान्यों की उपस्थिति रही। दून विश्वविद्यालय सहित विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने संगोष्ठी में भाग लिया।

#### यह समय भारतीय सनातन संस्कृति के पुनर्जागरण का है

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने पूज्य गुरुदेव के विचार साझा करते हुए वर्तमान समय को भारतीय सनातन संस्कृति के पुनर्जागरण का समय बताया। उन्होंने कहा कि मानवीय चेतना के मर्मज्ञ ऋषियों के तप और पुण्य से विनिर्मित भारत की गौरवशाली संस्कृति का वैश्विक विस्तार मानवमात्र के कल्याण के लिए आवश्यक है।

## गायत्री परिवार का प्रत्येक स्वयंसेवक सनातन संस्कृति का संरक्षक है। -श्री दुर्गादास उइके, केन्द्रीय राज्यमंत्री

दो दिन चली संगोष्ठी के समापन समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री दुर्गा दास उइके थे। उन्होंने कहा कि हमारी देव संस्कृति राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता का आधार है। उन्होंने इस संस्कृति के विकास के लिए शक्ति साधना करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार का प्रत्येक स्वयंसेवक सनातन संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य कर रहा है।

समापन सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय संयोजक श्री गोपाल आर्य और सांसद श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत, यूपीकेएससी के अध्यक्ष डॉ. जगमोहन राणा, डॉ. एसएस नेगी, प्रो. विनीत गहलोत ने भारत के सांस्कृतिक गौरव को सशक्त करने पर जोर दिया।

डॉ. चिन्मय जी माननीय मंत्री श्री उइके जी को सम्मानित करते हुए

## देसंविवि में भूमि सुपोषण एवं संरक्षण संबंधी कार्यक्रम

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज में भूमि सुपोषण एवं संरक्षण अभियान कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसके अंतर्गत विशेषज्ञों ने युवा पीढ़ी को भूमि को उर्वर बनाए रखने एवं पर्यावरण को संरक्षित बनाने के विविध उपायों की जानकारी और प्रेरणाएँ दीं।

प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि विश्व आज पर्यावरण असंतुलन के गंभीरतम दौर से गुजर रहा है। इस अभियान के अंतर्गत देश भर में जैविक खेती और प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन, जल-संरक्षण एवं वर्षा जल संचयन की नई तकनीकें, यज्ञ विज्ञान द्वारा भूमि की उर्वरता में सुधार, भूमि क्षरण को रोकने के लिए सामूहिक प्रयास किये जाने की आवश्यकता है।

अभियान के समन्वयक डॉ. राजीव गुप्ता ने बताया कि इस दिशा में कार्य करने के लिए देसंविवि के युवा संकल्पित हुए। इस अवसर पर अनेक विद्यार्थियों ने भूमि सुपोषण एवं पर्यावरण संरक्षण पर अपने विचार भी रखे।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
**संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

**सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ**
**फोन : 01334-311004, 9258369725**
**ईमेल :** pragyaabhiyan@awgp.in
**समाचार प्रेषण** : news@awgp.org

**Publication date: 12.04.2025**
**Place: Shantikunj, Haridwar**
**RNI-NO.38653/ 1980**
**Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26**
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26